खण्डेलवाल परिवारों का गोत्र एवं ग्रामवार विवरण

क्र.सं.	गोत्र	ग्राम
	सेवदा	
	माटोलिया	

सेवदा परिवार –

रणसीसर ग्राम में दो सेवदा भाई नूराराम और मानाराम ने विक्रम संवत् 1444 में अलाउदीन बादशाह के शासनकाल में की थी। बताया जाता है कि रणसीसर ग्राम की स्थापना इन दोनों भाईयों द्वारा की गई। ग्राम में उन्हें 6 हजार बीघा जमीन मिली एवं एक कुंए का निर्माण करवाया गया।

चूरू शहर के जौहरी सागर की पश्चिमी दिशा में सेवदा परिवार रहते हैं। श्री शिवभगवान सेवदा वर्तमान में सेवदा परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति हैं। शिक्षा विभाग में निरीक्षक के पद से रिटायर्ड शिवभगवान जी के पुत्र श्री शम्भुदयाल शर्मा के पास परिवार की वंशावली है। सेवदा गोत्र की वंशावली के बारे में शम्भुदयाल शर्मा ने जानकारी दी कि हमारे बडके संवत् 1304 में सीकर जिले के बाजौर में रहा करते थे। वहाँ के भोगता ठाकुरों द्वारा हमारे साथ लड़ाई किये जाने के कारण बाजौर से संवत् 1374 को यह स्थान छोड़ना पड़ा और बाजौर से परिवार सहित पिपराली आये। पिपराली में कुछ दिन बिताने के बाद सरदारशहर तहसील के ग्राम मालसर आये। मालसर से उतरी दिशा में कुछ ही किलोमीटर दूर रणसीसर जो सरदारशहर तहसील का ही एक राजस्व ग्राम है वहाँ स्थाई रूप से रहने लगे तब तक संवत् 1444 आ चुकी थी। संवत् 1444 में सेवदा परिवार द्वारा रणसीसर में एक कुआ बनवाया गया। संवत् 1960 में सेवदा परिवार चूरू आये (रणसीसर से चूरू आने का कारण)। चूरू आकर ओझा की गली में एवं नीम की गली में रहने लगे। सेवदा गोत्र के दयाराय जी रणसीसर का रणसीसर में रहना बताया गया है।

दयाराय के दो पुत्र चम्मोजी और तुलसीराम हुए। चम्मोजी की संतानें चम्मानी कहलाई जो हनुमानगढ के रतनपुरा ग्राम में बस गये। तुलसीराम जी के चार पुत्र क्रमशः टोडूराम (निःसन्तान या कम उम्र में देहान्त), ठाकरजी, सउराम व मोतीराम (निःसन्तान या कम उम्र में देहान्त) हुए।

टोडूजी के तीन पुत्र राजुराम, मुकनाराम, श्योजीराम। राजुराम (निःसन्तान या कम उम्र में देहान्त)। मुकनाराम के तीन पुत्र हुए डूंगरराम (निःसन्तान या कम उम्र में देहान्त), सुखाराम व मानाराम (निःसन्तान या कम उम्र में देहान्त)। इसी प्रकार सुखाराम जी सेवदा के चार पुत्र लादुराम (निःसन्तान), जैसराज, मगराज व रावतमल। जैसराज के एक पुत्र लक्ष्मीनारायण व मगराज के तीन पुत्र हजारीप्रसाद, शिवकुमार व रामलाल हुए। लादुराम झारिया ग्राम में बकरी चराते थे। आसाराम सेवदा लादुराम को चूरू लेकर आये।

ठाकरजी के एक पुत्र खींवराज तथा खींवराज के दो पुत्र चीमनजी (निःसन्तान या कम उम्र में देहान्त) तथा श्यामलाल के तीन पुत्र देवीदत (घर छोड़ कर चले गये), नोरंगलाल (घर छोड़ कर चले गये) व गौरीदत। देवीदत के पाँच पुत्र चण्डीप्रसाद, सीताराम, कैलाश, हरिप्रसाद व चिरंजीलाल। इसी प्रकार गौरीदत के तीन पुत्र पवन व दो पुत्र छोटी उम्र में ही गुजर गये।

रावतमल के पाँच पुत्र पहले का नाम नहीं, नथमल, घनश्याम, सांवरमल व पाँचवे का नाम नहीं।

टोडूजी के पुत्र श्योजीराम के तीन पुत्र आसाराम, गोपालराम, बेगराज व तीन पुत्री कुनणा एवं पाना एवं तीसरी का नाम याद नहीं। आसाराम के बारे में बताया जाता है कि यह व्यक्ति कुटुम्ब पालक था। श्योजीराम का विवाह झारिया के माटोलिया परिवार में हुआ। कुनणा का विवाह सरदारशहर तहसील के दलूसर ग्राम में ताराचन्द पिपलवा से हुआ तथा दूसरी बहन जिसका नाम याद नहीं उसका विवाह दलूसर में ही ताराचन्द के भाई पेमाराम के साथ हुआ व तीसरी बहन पाना का विवाह अडसीसर में मंगलहारा परिवार तथा कुनणा के दो पुत्र व दो पुत्रियां हुई, पुत्र सुखदेव एवं कानाराम तथा दो पुत्रियां बख्तावरी एवं नानू। नानू का विवाह गोलसर तहसील रतनगढ मे हुआ तथा बख्तावरी का विवाह बीकानेर जिले के करणीसर भाटीयान ग्राम में चोटिया परिवार में हुआ। पाना का विवाह सरदारशहर तहसील के अड़सीसर ग्राम में मंगलहारा के हुआ।

शिवभगवान जी सेवदा बताते हैं कि उनका जन्म सन् 1928 में हुआ। चूरू नगर में छोटुलाल जी सुराणा रहा करते थे। जो ऊँट पर बैठकर बाजार में निकलते एवं अमरूद खरीद कर रख लेते और अमरूदों को बाँटते जाते। श्री शिवभगवान सेवदा द्वारा हाल ही में एक पुस्तक ''भावाभिव्यक्ति'' लिखी है। पुस्तक में परिवारजनों की तस्वीरे लगाई गई है। प्रथम तस्वीर शिवभगवान जी के पिताजी श्री बेगराज जी सेवदा एवं उनकी धर्मपत्नी सोनादेवी तथा दूसरी तस्वीर स्वयं शिवभगवानजी सेवदा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनीदेवी की है।

रणसीसर से धोधलिया आने का कारण बताया कि रामकिशन जोशी धोधलिया में शिवभगवान जी की बुआ का पोता था। शिवभगवान जी के एक ताऊ जो डीलडोल में तकड़ा व दाढी मूँछ रखते थे, चूरू में रहते थे।

रणसीसर के सेवदा

रणसीसर ग्राम सेवदा परिवारों के मूल ग्रामों में से एक ग्राम माना गया है। सरदारशहर, हनुमानगढ, रतनगढ, चूरू आदि बहुत से नगरों एवं ग्रामों में रह रहे सेवदा परिवारों का रणसीसर से निकास जाहिर होता है। रणसीसर ग्राम में रह रहे सेवदा परिवारों का विवरण –

रामचन्द्र सेवदा		सुरजाराम
		बुधराम सेवदा
		पूनमचन्द
		सालिगराम
		छगनलाल

बुधराम सेवदा		बजरंगलाल
		सीताराम
		रूकमणीदेवी – का विवाह दलूसर में फूसाराम पुत्र रूघाराम जोशी के साथ।
		द्रोपदीदेवी – का विवाह रामजीलाल चोटिया के साथ दलूसर में।
		कलावतीदेवी – का विवाह दलूसर में केशराराम पुत्र बालूराम चोटिया के साथ।
		मंजूदेवी – का विवाह सरदारशहर में विनोदकुमार नोवाल के साथ।
		सुनितादेवी – का विवाह रतनगढ में राधेश्याम पिपलवा के साथ।

सेवदा गोत्र का दूसरा वंश चूरू शहर के प्रतिभा नगर रहता है। श्री जयप्रकाश सेवदा राजस्व विभाग में भू अभिलेख निरीक्षक के पद पर कार्यरत है। उनका कहना है कि हमारा परिवार झुंझुनूं के किशोरपुरा से है, सन 1832 में टीकूराम जी सेवदा के पुत्र ज्ञानीराम जी किशोरपुरा से घांघू आये एवं घांघू से बाढकी ग्राम आये। हमारा परिवार के व्यक्ति घांघू एवं बाढकी में रहते हैं।

टीकूराम जी सेवदा के एक पुत्र ज्ञानीराम जी हुए एवं ज्ञानीराम जी सेवदा के दो पुत्र बिशनाराम एवं केशाराम हुए। बिशनाराम के 6 पुत्र हुए जिनका विवरण निम्न है –

बिशनाराम

शंकरलाल | गोविन्द | बींजराज (केशाराम के गोद) | नंदराम | श्योनारायण | भगवानाराम

केशाराम के कोई पुत्र नहीं होने के कारण बींजराज गोद आये।

बींजराज के दो विवाह हुए पहली पत्नी से सूरजमल एवं दूसरी पत्नी से मालूराम हुए।

सूरजमल के चार पुत्र हुए जिनका विवरण निम्न है।

सूरजमल

- हड़मानबक्स (बाढकी से चूरू आये)
- रामनिवास (संतान घांघू में)
- चिरंजीलाल (संतान घांघू में)
- मदनलाल (संतान घांघू में)

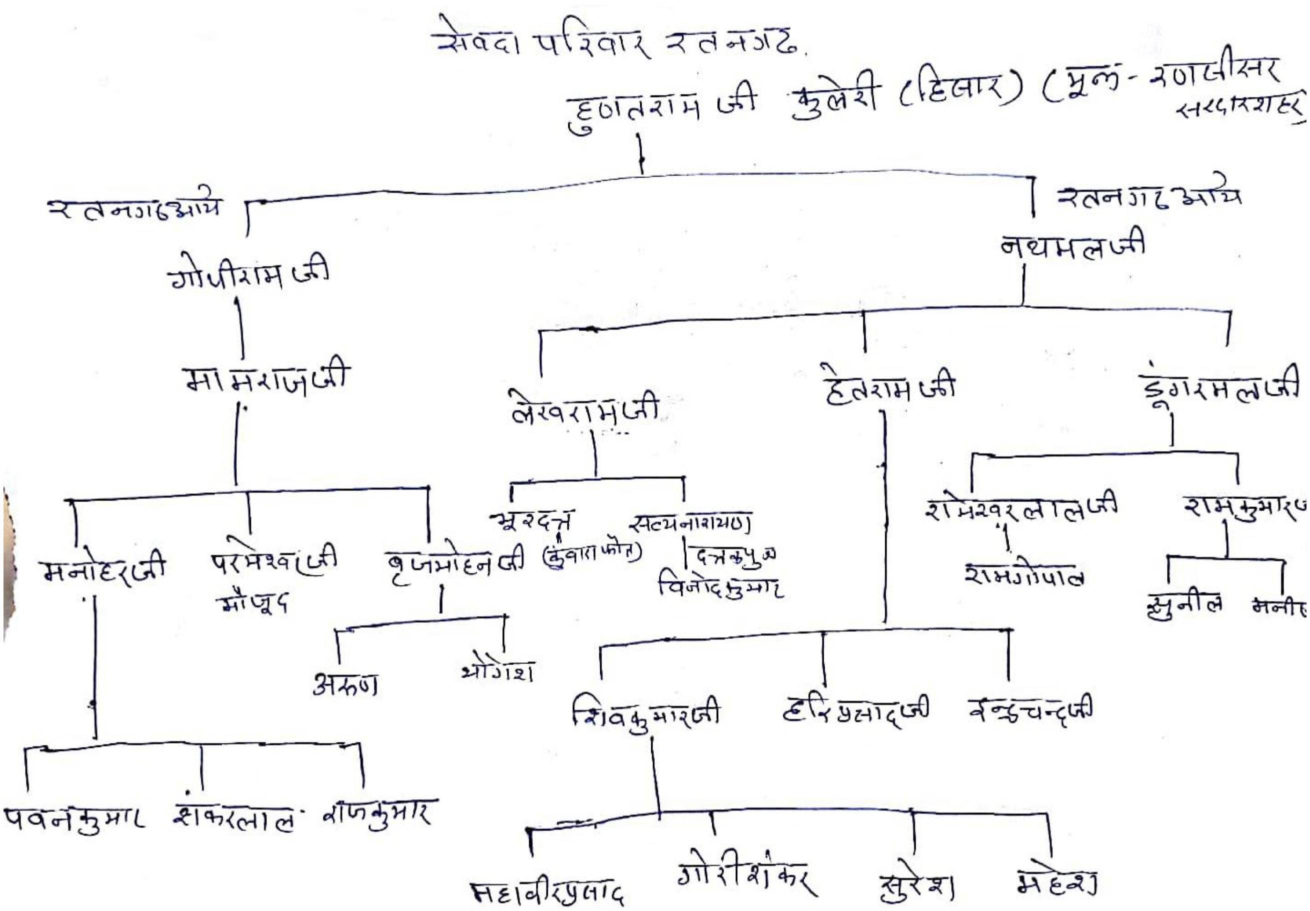
इसी प्रकार बींजराज के पुत्र मालूराम के दो पुत्र हुए मुरलीधर एवं लिखमीचन्द जिनमें से मुरलीधर की संतानें बीकानेर चली गई।

हनुमानप्रसाद (हनुमानबक्स) सेवदा के दो पुत्र हुए सत्यनारायण जी एवं प्रहलाद जी। सत्यनारायण जी के तीन पुत्र श्यामसुन्दर, जयप्रकाश एवं सुनिल कुमार है। प्रहलाद जी के दो पुत्र हरिप्रसाद एवं राजेश कुमार है।

सत्यनारायण जी अपनी नानी ज्यानादेवी के गोद आये। सत्यनारायण जी के नाना का नाम ईशरराम जी था जिनका गोत्र बील बताया गया। किशोरपुरा ग्राम गुढा तहसील से पूर्व में स्थित है वर्तमान में इस ग्राम में कोई सेवदा परिवार नहीं रहता है, किशोरपुरा ग्राम में खण्डेलवाल समाज का एक मात्र पिपलवा परिवार रहता है। महेश कुमार पिपलवा का परिवार किशोरपुरा ग्राम में रहता है।

चूरू की रतनगढ तहसील में सेवदा परिवार रहते हैं। कमलकुमार सेवदा का परिवार रतनगढ में रहता है। कमल कुमार रतनगढ में भू अभिलेख निरीक्षक के पद पर कार्यरत है। उनका कहना है कि हमारा निकास हरियाणा राज्य के अग्रोहा के पास कुलेरी ग्राम से है। कुलेरी ग्राम अग्रोहा से 7 किमी पूर्व दिशा में स्थित है। कुलेरी के सेवदा परिवार जो रतनगढ में हैं वे सरदारशहर तहसील के ग्राम रणसीसर से कुलेरी गये हैं।

हुणताराम सेवदा कुलेरी से रतनगढ आये। हुणताराम के दो पुत्र गोपीराम और नथमल हुए। कमलकुमार सेवदा द्वारा अपने परिवार के बारे में भेजा गया वंश वृक्ष निम्न प्रकार से है –


सेवदा परिवार रतनगढ़.
हुणतराम जी कुलेरी (हिसार) (मूल- रणजीसर सरदारशहर
रतनगढ़ आये
गोपीराम जी
मामराज जी
मनोहर जी
परमेश्वर जी मौजूद
बृजमोहन जी
अरुण
योगेश
पवनकुमार
शंकरलाल
राजकुमार
रतनगढ़ आये
नथमल जी
लेखराम जी
भूरदत्त
सत्यनारायण (कुंवारा फौत)
दत्तकपुत्र विनोदकुमार
हेतराम जी
शिवकुमार जी
हरिप्रसाद जी
चन्द्रचन्द जी
महावीरप्रसाद
गौरीशंकर
सुरेश
महेश
डूंगरमल जी
रामेश्वरलाल जी
रामगोपाल
रामकुमार
सुनील
मनीष

माटोलिया परिवार

श्री देवकीनन्दन माटोलिया राजस्व विभाग में भू अभिलेख निरीक्षक के पद पर कार्यरत है, उनके द्वारा बताया गया कि हमारे परिवार का निकास संभावित दो जगहों (लोहारू अथवा लोहार्गल) से होना जाहिर किया गया है, यहाँ से संवत् 1400 में ढाणी मांकड़ी होना बताया गया है। ढाणी मांकड़ी में हमारे पूवर्जों ने 400 बरसों तक का समय व्यतित किया व संवत् 1800 में ढाणी मांकड़ी से अजाड़ी ग्राम में आये। अजाड़ी से चूरू आना हुआ। अजाड़ी ग्राम झुंझुनूं जिला मुख्यालय से 9 किमी दूर नरसिंगपुरा के पास है। ढाणी मांकड़ी नाम के थाने के पास है। बताया जाता है कि संवत् 1704 में ढाणी मांकड़ी के हमारे परिवार में एक पूर्वज जिनका नाम हरिदास माटोलिया था, उन्होनें 120 बरस की उम्र में जीवित समाधि ली। ढाणी मांकड़ी में बताया जाता है कि श्री हरिदास की तिबारी एवं उनके पगल्या आज भी मौजूद है।

देवकीनन्दन माटोलिया द्वारा बताया गया कि हम पाँच भाई हैं, जिनके नाम क्रमशः श्यामसुन्दर, राधेश्याम, ऋषिकेश, श्रवणकुमार व देवकीनन्दन है। देवकीनन्दन के पिताजी का नाम सीताराम है। शुभकरण (वर्तमान में पिलानी), सीताराम (चूरू रहे) तीसरे उंकारदत (अजाड़ी रहे) ये तीनों भानीराम जी के पुत्र थे। सीताराम जी भानीराम के जन्मे एवं रामनारायण के गोद आये। रामनारायण जी चूरू रहते थे एवं उनका गोत्र माटोलिया था। रामनारायण एवं भानीराम सगे भाई थे।

<table>
<tr><td rowspan="4">गोविन्दराम माटोलिया (1)

गोविन्दराम की पत्नी का सदाकोरीदेवी</td><td rowspan="4"></td><td>रामनारायण</td></tr>
<tr><td>भानीराम</td></tr>
<tr><td>सूरजमल</td></tr>
<tr><td>रामकरण – का विवाह नानूदेवी के साथ।</td></tr>
</table>

रामनारायण (2) पुत्र गोविन्दराम माटोलिया रामनारायण का विवाह मणीदेवी पिपलवा के साथ। मणीदेवी चिरंजीलाल पुत्र भूरामल पुत्र डूंगरमल की बुआ है।		सीताराम – भानीराम से रामनारायण के गोद आये। (भानीराम एवं रामनारायण सगे भाई)

<table>
<tr><td rowspan="3">सीताराम (3) पुत्र रामनारायण पुत्र गोविन्दराम माटोलिया

सीताराम जी भानीराम के जन्मे एवं रामनारायण के गोद</td><td rowspan="3"></td><td>श्यामसुन्दर</td></tr>
<tr><td>राधेश्याम – का विवाह प्रोफेसर चन्द्रशेखर पिपलवा की पुत्री साधना के सथ।</td></tr>
<tr><td>ऋषिकेश – का विवाह चौमू जगदीश पिपलवा की पुत्री</td></tr>
</table>

आये। रामनारायण माटोलिया के पिता का नाम गोविन्दराम एवं माता का नाम सदाकोरीदेवी सीताराम की पत्नी का नाम गोमतीदेवी चोटिया पुत्री गुलजारीलाल चोटिया। गोमतीदेवी का पीहर कंकराणा		रंजना के साथ।
		श्रवणकुमार – अविवाहित
		देवकीनन्दन – का विवाह त्यावली रामचन्द्र जोशी की पुत्री सरिता के साथ।
		दुर्गा – का विवाह नरसीपुरा में इन्द्रचन्द जोशी के पुत्र संजयकुमार के साथ।

भानीराम (2) पुत्र गोविन्दराम माटोलिया भानीराम का विवाह सरस्वतीदेवी के साथ।		सीताराम – रामनारायण के गोद
		बजरंगलाल – अविवाहित फौत
		शुभकरण
		उंकारदत

सूरजमल (2) पुत्र गोविन्दराम माटोलिया सूरजमल का विवाह गिगियादेवी के साथ।		

शुभकरण माटोलिया के परिवार का विवरण

शुभकरण (3) पुत्र भानीराम पुत्र गोविन्दराम माटोलिया शुभकरण का विवाह मनभावन्तीदेवी के साथ।		रतनलाल
		राजकुमार – अविवाहित
		वेदप्रकाश
		मनोजकुमार
		सुमित्रा – का विवाह बिगोदणा में
		शकुन्तला – का विवाह हुकुमपुरा में रूँथला परिपार में।

		मोहनीदेवी – का विवाह धेतरवाला में चोटिया परिवार में।
		उर्मिला – को विवाह लोटिया में रामनिवास नोवाल के साथ।
		सुलोचनादेवी – का विवाह नोहर के पास ढाढकी में।

रतनलाल (4) पुत्र शुभकरण पुत्र भानीराम माटोलिया पुत्र गोविन्दराम माटोलिया रतनलाल का विवाह चिड़ावा में सरोजदेवी चोटिया के साथ।		

वेदप्रकाश (4) पुत्र शुभकरण पुत्र भानीराम माटोलिया पुत्र गोविन्दराम माटोलिया वेदप्रकाश का विवाह झिंघड़िया (लोटिया) में जोशी परिवार में।		

मनोजकुमार पुत्र शुभकरण पुत्र भानीराम माटोलिया मनोजकुमार का विवाह मावन्डा में जोशी परिवार में।		

उंकारदत माटोलिया के परिवार का विवरण

<table>
<tr><td rowspan="3">उंकारदत (3) पुत्र भानीराम पुत्र गोविन्दराम माटोलिया

उंकारदत का विवाह बालाजी (गुढा के पास) महादेवी के साथ।</td><td rowspan="3"></td><td>महेशकुमार</td></tr>
<tr><td>देवेन्द्रकुमार</td></tr>
<tr><td>राजेशकुमार</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="3">महेशकुमार पुत्र उंकादरत पुत्र भानीराम पुत्र गोविन्दराम माटोलिया

महेशकुमार का विवाह श्यामा की ढाणी डीडवानिया परिवार में।</td><td rowspan="3"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="3">देवन्द्रकुमार पुत्र उंकादरत पुत्र भानीराम

देवन्द्रकुमार का विवाह चिड़ावा चोटियाा परिवार में</td><td rowspan="3"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="3">राजेशकुमार पुत्र उंकादरत पुत्र भानीराम

राजेशकुमार का विवाह जयपुर</td><td rowspan="3"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

अरविन्द माटोलिया का परिवार प्रतिभानगर चूरू से बिसाऊ में निवास करता था। अरविन्द माटोलिया के दादाजी का नाम हड़मानबक्स माटोलिया है। हड़मानबक्स मोटालिया का जन्म सन् 1895 में हुआ एवं हड़मानबक्स माटोलिया का विवाह अणचीदेवी जो रामगढ के जोशी परिवार से है, से हुआ। अणचीदेवी का जन्म सन् 1896 में बिसाऊ में हुआ। हड़मानबक्स मोटालिया के पिता का नाम श्यामलाल एवं श्यामलाल के पिता का नाम जालीराम है। हड़मानबक्स माटोलिया पाँच भाई हैं।

पिपलवा परिवार

दलूसर के पिपलवा

चूरू शहर के जौहरी सागर की पश्चिमी दिशा में पिपलवा परिवार रहते हैं। बही भाट की बही के अनुसार खण्डेला से इनका निकास बताया जाता है। जैसा कि उस समय स्थानापन्न के लिए सता और भूख दो महत्वपूर्ण घटक थे, जिसके कारण मनुष्यों का एक स्थान से दूसरे स्थान आना जाना लगा रहता था, स्थायित्व के लिए सत्ता का सहज होना आवश्यक था, शेष स्थितियां उसके बाद प्रभावकारी थी। बताया जाता है पिपलवा परिवार खण्डेला से निकल कनवारी के गढ में रहे और गढ में पूजा पाठ का काम करने लगे। कनवारी में पशुओं को पानी पिलाने को लेकर उत्पन्न विवाद ने लड़ाई का रूप दिया जिसका परिणाम यह रहा कि कड़वारी को उसी समय छोड़ना पड़ा। दलूसर ग्राम में रहने वाले चुनाराम पिपलवा बताते हैं कि हमारे बडकों का कड़वारी ग्राम का अन्न जल त्यागा हुआ है, हम एक बार सालासर गये तो रास्ते में कड़वारी आया तो बताया कि हम पहले इस ग्राम में रहते थे। कड़वारी से निकल कर सिधे उतर दिशा की ओर रवाना हुए और सरदारशहर तहसील से उतरी एवं पश्चिमी दिशा में स्थित गिड़गिचिया ग्राम में आये। चुनाराम बताते हैं कि मेरे दादाजी कहा करते थे कि कड़वारी से एक कच्चा एवं मुख्य रास्ता उनको बताया गया था, उस समय वहीं एक रास्ता थो इस दक्षिण को उतर के स्थानों से मिलाता था यह रास्ता आगे चलकर पल्लू होते हुए आगे चला जाता था। वह मुख्य रास्ता कड़वारी के रास्ते से उस समय वर्तमान रतनगढ, पाबूसर दूलरासर होते हुए सरदारशहर के पश्चिम से होते हुए मालासर, रणसीसर से आगे दलूसर के पश्चिम से होते हुए जाता था। वर्तमान का मेगा हाईवे उस समय के मुख्य मार्ग में शामिल नहीं था। पिपलवा परिवार गिडगिचिया से दलूसर संवत् 1799 (सन् 1742) में आया। उस समय जीवराज (जयराम) पुत्र बीजराज दलूसर में आये। हिन्दुमल के पिता का नाम बींजराज था, हिन्दुमल की पत्नी का नाम ज्ञानी। बींजराज के पिता का नाम जीवराज (जयराम)। दूदाराम की पत्नी का नाम सोना था। हिन्दुमल के तीन पुत्र होना बताया जाता है, जिनमें से दो भाईयों की संतानों का विवरण नहीं है।

	जीवराज (जयराम) (1)			
		↓		
		बींजराज (2)		
		↓		
		हिन्दुमल (3)		
		↓		
		दूदाराम (4)		

दूदाराम का निवास दलूसर ग्राम में होना बताया गया। दूदाराम के ग्राम दलूसर में तीन पुत्र बताये जाते हैं, सेवाराम, ताराचन्द व पेमाराम।

दूदाराम (4)

सेवाराम (5) ताराचन्द (5) पेमाराम (5)

सेवाराम पुत्र दूदाराम की संतान का विवरण (जितना उपलब्ध है)

सेवाराम (5) पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • सेवाराम की पत्नी का नाम सोना • सेवाराम का परिवार दलूसर से रतनगढ आना बताया गया		रामलाल – रामलाल का विवाह सुजानगढ में बोचीवाल परिवार में।
		पाना – पाना का विवाह गोलसर काछवाल परिवार में हुआ।

ताराचन्द पुत्र दूदाराम संतान का विवरण

ताराचन्द (5) पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम ताराचन्द की पत्नी का नाम कुनणा। कुनणा के पिता का नाम श्योजीराम सेवदा। ताराचन्द की ससुराल रणसीसर। कुनणा के पिता का नाम श्योजीराम व भाई का नाम बेगराज सेवदा। श्योजीराम का विवाह झारिया के माटोलिया परिवार में हुआ।		सुखदेव
		कानीराम
		नानूदेवी (नानूदेवी का जन्म दलूसर में हुआ एवं विवाह गोलसर में)
		बख्तावरी (बख्तावरी का विवाह बीकानेर जिले के करणीसर भाटीयान ग्राम में चोटिया परिवार में हुआ।) पती का नाम आसाराम चोटिया। बींजाराम बख्तावरी का पुत्र।

सुखदेव (6) ताराचन्द पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम ● सुखदेव का जन्म 1916 (संवत् 1973 भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अर्थात एक्युं वार गुरूवार) (शक 1838) सुखदेव पुत्र ताराचन्द पिपलवा का दलूसर ग्राम में जन्म तथा जन्म का नाम प्रेमप्रकाश। ● सुखदेव के दो विवाह हुए, पहला विवाह गोलसर के पिथाराम जी पुत्री गोपालबाई के साथ संवत् 1981 बैसाख सुदी तीज (आखा तीज) सात मई 1924 को हुआ। गोपालबाई के एक पुत्री हुई सुरतीबाई, सुरती बाई का विवाह रतनगढ के जोशी परिवार में हुआ। गोपालबाई को समय से पहले जाना पड़ा, गोपालबाई का स्वर्गवास जेठ बदी 6 संवत् 1990 (13जून 1933) को हुआ। सुखदेव जी का दूसरा विवाह पाबूसर के मंगल्यारा परिवार में हुआ। दूसरी पत्नी का नाम सुवटी, सुवटी के पिता का नाम जोगमल मंगल्यारा व भाई गंगाराम मंगल्यारा। सुवटी का विवाह जेठ बदी चौदस संवत् 1991 को हुआ व स्वर्गवास 19 फरवरी,1991 को हुआ। सुखदेव जी सरकारी सेवा में अध्यापक पद से सन् 1966 में रिटायर्ड हुए व स्वर्गवास 31 मार्च, 1987 को हुआ। ● नाकरासर ग्राम में चोटिया परिवार रहते हैं। एक दिन महावीर पुत्र रामगोपालजी चोटिया से मिलना हुआ। महावीर प्रसाद ने मुझे बताया कि मेरे नानोजी का नाम दीपाराम काछवाल था और गोपाल बाई दीपाराम काछवाल की सगी बहिन थी।		सुरतीबाई (गोपालबाई से)
		पुरूषोतमलाल (सुवटी से)
		अजीतप्रसाद (सुवटी से)
		देवकरण (सुवटी से)
		गीतादेवी (सुवटी से) गीता का जन्म मींगसर सुदी नवमी संवत् 2016 सुबह के चार बजे हुआ। गीता का विवाह निर्जला ग्यारस वार बुधवार 06 जून 1979 को हुअ रामसरा के नोवाल परिवार जो वर्तमान में चूरू रहते हैं में बदरीप्रसाद नोवाल के पुत्र दौलत राम के साथ हुआ। दौलत राम का स्वर्गवास 03 जून2022 को हुआ।

पुरूषोतमलाल (7) पुत्र सुखदेव पुत्र ताराचन्द पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • पुरूषोतमलाल का विवाह मिती जेठ सुदी चौथ संवत् 2021 को हुआ एवं स्वर्गवास माघ माह की शुक्ल पक्ष की दशमी (25 जनवरी, 2010) को हुआ। पुरूषोतमलाल सरकारी सेवा में अध्यापक के पद पर कार्यरत थे।		ओमप्रकाश
		राजूदेवी

अजीतप्रसाद (7) पुत्र सुखदेव पुत्र ताराचन्द पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • अजीतप्रसाद का जन्म आसोज सूदी नवमी संवत् 2005 दिन के 04 बजे (07 जुलाई1948) को हुआ एवं स्वर्गवास 06 जून,2022 को हुआ। अजीतप्रसाद का विवाह कमला के साथ जुलाई,1970 को हुआ। कमला रतनगढ के कन्हैयालाल माटोलिया की पुत्री थी। कमला का स्वर्गवास 21 मई,2007 को हुआ।		श्रवणकुमार
		नरेन्द्र कुमार

देवकरण (7) पुत्र सुखदेव पुत्र ताराचन्द पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • देवकरण का जन्म आसोज बदी दूज संवत् 2008 (17.10. 1951) को दिन के 11 बजे हुआ। देवकरण का विवाह नहराणा ग्राम में हरदयाल रूँथला की पुत्री कमला के साथ हुआ।		

पेमाराम पुत्र दूदाराम संतान का विवरण

पेमाराम (5) पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम पेमाराम का विवाह कुनणा की बहन के साथ हुआ। कुनणा रणसीसर में सेवदा परिवार से अर्थात पेमाराम की ससुराल रणसीसर में।		सूरजाराम
		लच्छीराम (लच्छीराम की ससुराल देवासर, चोटिया) पत्नी का नाम जमना) लच्छीराम के एक लडकी हुई जिसका नाम रूकमा) रूकमा के पति का नाम रामचन्द्र एवं रूकमा का विवाह गंगानगर हुआ। लच्छीराम दलूसर में नोरंगलाल चोटिया के पिता

		रामजीलाल का सगा फुफा है। जमना के पिता का नाम रामप्रसाद चोटिया।
		मीरादेवी (मीरां का डाटा उपलब्ध नहीं)

सुरजाराम (6) पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम (सुरजाराम की ससुराल मेलूसर (रतनगढ) चोटिया परिवार में तथा पत्नी का नाम माली)		किशनलाल (परिवार रतनगढ में)
		रामेश्वरलाल (परिवार दलूसर में)
		चुन्नीलाल (परिवार दलूसर में)
		सुगनाराम (परिवार दलूसर में)
		कालूराम
		खुमाराम
		भंवरीदेवी
		मोहनीदेवी
		लाली (बीकानेर विवाह) – लालीबाई का विवाह जोशी परिवार में भंवरलाल जोशी के साथ।
		केशर (बीकानेर विवाह)

किशनलाल (7) पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम •किशनलाल पुत्र सुरजाराम का परिवार दलूसर से रतनगढ चला गया। किशनलाल का विवाह रतनगढ में ही नोवाल परिवार में हुआ। किशनलाल की पत्नी का नाम सीता। सीता के पिता का नाम जानकीलाल नोवाल व जानकीलाल नोवाल के पिता का नाम रामसुखदास नोवाल। सीता का ननिहाल टिडियासर (रतनगढ) बणसिया के।		राधेश्याम
		रामकुमार

- रामेश्वरलाल पुत्र सुरजाराम का परिवार –

रामेश्वरलाल (7) पुत्र सुरजाराम पुत्र		बजरंगलाल

पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम		मोतीलाल
		श्यामलाल
		हनुमानप्रसाद
		रूकमणी
		द्रोपदी (ससुराल पल्लू पती का नाम सत्यनारायण पुत्र हरिराम चोटिया) द्रोपदी के तीन संन्तान मांगीलाल, मुरारीलाल व दयादेवी।

बजरंगलाल (8) रामेश्वरलाल पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • बजरंगलाल का विवाह राजासर चौरडिया में चोटिया गोत्र में हुआ व पत्नी का नाम पुष्पा।		

मोतीलाल (8) रामेश्वरलाल पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • मोतीलाल का विवाह रणसीसर ग्राम में आखातीज के दिन संन 1992 में सेवदा परिवार में हुआ। मोतीलाल के ससुर का नाम पूनमचन्द पुत्र रामचन्द्र सेवदा पुत्र फताराम सेवदा। मोतीलाल की पत्नी का नाम गीता।		

श्यामलाल (8) रामेश्वरलाल पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम। श्यामलाल का विवाह रामसीसर भेड़वालिया में हनुमानप्रसाद नोवाल की पुत्री कमला के साथ।		

हनुमान (8) रामेश्वरलाल पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम		

- चुन्नीलाल पुत्र सुरजाराम वर्तमान में दलूसर रहते हैं। चुन्नाराम का विवाह भादासर में काछवाल परिवार में गिधाराम की पुत्री आनन्दी के साथ हुआ। चुन्नाराम के 8 संतानें हुई जो निम्न है –

चुनाराम (7) पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम चुन्नाराम का विवाह भादासर में काछवाल परिवार में गिधाराम की पुत्री आनन्दी के साथ हुआ।		मघाराम
		ओमप्रकाश
		लेखराम
		महेश
		श्रवण
		केसराराम
		शंकरलाल
		मैना

सुगनाराम(7) पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम (सुगनाराम का विवाह पेमाराम नोवाल की पुत्री रूकमणी(कलावती) के साथ सरदारशहर में हुआ।		सीताराम (जन्म तिथि 09 जून1985) (विवाह 30. 04.2006 देवासर में चोटिया परिवार में मोना पुत्री भजनलाल के साथ)
		सन्तोष (जन्म 1980) (विवाह हनुमानगढ में श्यामलाल पुत्र इन्द्राज चोटिया के साथ)
		सरोज (जन्म 1983) (विवाह करणीसर में कन्हैयालाल पुत्र अन्नाराम चोटिया के साथ)

कालूराम (7) पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम		कालूराम अविवाहित स्वर्गवास हो गया।

खुमाराम (7) पुत्र सुरजाराम पुत्र पेमाराम पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम (खुमाराम का विवाह देवासर में बनाराम गोलवा की पुत्री सरस्वती के साथ हुआ।		शारदा
		रामलाल
		सुन्दर

कानीराम (6) ताराचन्द पुत्र दूदाराम पुत्र हिन्दूमल पुत्र बींजराज पुत्र जयराम • कानीराम का पहला विवाह रामगढ शेखावाटी में चौथमल जोशी की बहन भागोती के साथ एवं दूसरा विवाह थैलासर के जोखीराम लढानिया की पुत्री गोमती के साथ। कानीराम पुत्र ताराचन्द के 9 संतान हुई जिनका विवरण निम्न है		नोजादेवी
		गीतादेवी
		चण्डीप्रसाद – जन्म आसोज सूदी तेरस संवत् 2004
		ऊषा – का विवाह चूरू में सत्यनारायण झिखनाड़िया के साथ।
		राधा – का विवाह फतेहपुर में।
		ललिता – का विवाह रामगढ शेखावाटी में हुआ।
		दुलीचन्द – प्रथम विवाह हंसा के साथ।
		पवनकुमार जन्म 09 जुलाई,1962 जन्म स्थान चूरू। विवाह 16 मई, 1989। पत्नी का नाम अंजना पुत्री मुरारीलाल नोवाल ससुराज रतनगढ।
		राजकुमार – विवाह दिनांक 26.11. 1992। पत्नी का नाम लक्ष्मी पुत्री देवकीनन्दन चोटिया।

चूरू में पिपलवा परिवार का अन्य विवरण

भवानीशंकर पीपलवा भवानीशंकर का विवाह सिरसा में गोरधन जोशी की पुत्री चन्द्रभागा के साथ हुआ।		प्रमोद
		कमल
		सरोज – का विवाह ढूकड़ा (नोहर) में।

गोविन्दराम पिपलवा गोविन्दराम का विवाह रतननगर में रामीदेवी सेवदा के साथ।		मूलचन्द
		लीलाधर
		गिन्नीदेवी
		सातूदेवी – का विवाह पाबूसर

मूलचन्द पूत्र गोविन्दराम पिपलवा		

लीलाधर पुत्र गोविन्दराम पिपलवा लीलाधर का विवाह चूरू में भींवराज चोटिया की पुत्र आनन्दी के साथ।		

तोलाराम पिपलवा के पुत्र पवनकुमार पिपलवा ने बताया कि हमारा निकास चूरू तहसील के झारिया ग्राम से है। इससे अधिक जानकारी पवनकुमार के पास उपलब्ध नहीं है।

चूरू शहर में सफेद घन्टाघर से दिखणादी दिशा में चुन्नीलाल पिपलवा हलवाई की दुकान थी। चुन्नीलाल पिपलवा के तीन पुत्र केशरदेव, सीताराम एवं शिवभगवान हुए। चुन्नीलाल पिपलवा की माताजी अणचीदेवी पुरूषोतम जी चोटिया के पिताजी बालचन्द चोटिया की बहिन थी। चुन्नीलाल पिपलवा का परिवार झारिया ग्राम से करीब सतर बरस पूर्व अर्थात 1950 के आसपास चूरू आये। उस समय झारिया से 6 परिवार तारानगर चले गये।

ग्राम झारिया में ,खण्डेलवाल परिवारों के रहने के बारे में जानकारी प्राप्त हुई कि झारिया का ठाकर की शादी गुढा के पास भोजगढ ग्राम में हुई। झारिया ग्राम में ठुकराणी का मन नहीं लगने के कारण उसने अपनी महिला मित्र जो पिपलवा की बेटी थी से बात कि

खों में पिपलवा परिवार आज भी रहते हैं।

प्रतिभानगर में पिपलवा परिवार

गंगा बुआ – वर्तमान प्रतिभानगर का पुराना नाम बांडियाबास था। प्रतिभानगर में सूरजमल पिपलवा एवं सूरजमल जोशी एक ही नाम के दो व्यक्ति रहते थे। प्रतिभानगर में एक स्त्री रहा करती थी जिसका नाम गंगा बुआ था। गंगा बुआ का विवाह सूरजमल पिपलवा के साथ हुआ था। सूरजमल पिपलवा रंगून रहते थे। यह वह समय था जब भारत से बर्मा का विभाजन (सन् 1948) हो रहा था। बर्मा में रहने वाले भारतीयों को यह विकल्प दिया गया कि जो भारत जाना चाहे वो जा सकते हैं। नौकरी करने वाले तो भारत आ गये एवं धंधा करने वाले बर्मा में ही रह गये।

डूंगरमल		भूरामल

भूरामल पुत्र डूंगरमल		कन्हैयालाल
		किशनलाल
		चिरंजीलाल
		शंकरलाल
		जयदेई

कन्हैयालाल पुत्र भूरामल पुत्र		मोहनीदेवी

डूंगरमल		किशनलाल

किशनलाल पुत्र भूरामल पुत्र डूंगरमल		मोहनलाल
		चन्दादेवी
		गोपीराम (सूरजमल के गोद गया)
		पवनकुमार
		सन्तोषदेवी
		मंजूदेवी

मोहनलाल पुत्र किशनलाल पुत्र भूरामल पुत्र डूंगरमल		सुबोधकुमार – का विवाह सत्यभामा डिवानिया के साथ नवलगढ में
		महेन्द्र कुमार – का विवाह सुमित्रादेवी पुत्री सत्यनाराण जोशी की पुत्री के साथ सरदारशहर में।
		मायादेवी – का विवाह श्रीमाधोपुर जोशी परिवार में
		सीतादेवी – का विवाह नरेन्द्र पुत्र रामगोपाल जोशी के साथ रतननगर में।

चोटिया परिवार

वर्तमान में चूरू शहर के प्रतिभानगर में चोटिया परिवारों का बाहुल्य है। श्री देवकीनन्दन चोटिया जिनकी गूदड़ी बाजार में जुतों का दुकान है, उनके द्वारा परिवार का चूरू में आगमन के बारे में बताया कि उनका सरदारशहर तहसील के राजासर चौरड़िया ग्राम से निकास है। अकाल की विभीषिका से जुड़े छप्पनिया समय सन 1899 में भोमराज जी चोटिया के निधन के बाद उनकी पत्नी पानादेवी दो पुत्र टीकूराम व झाबरमल चूरू आये एवं तोलाराम चोटिया के घर रहे। कुछ समय तोलाराम के घर रहने के बाद हमने जमीन खरीद कर मकान करवा लिये। देवकीनन्दन के पिता का नाम झाबरमल एवं दादा का नाम भोमराज है।

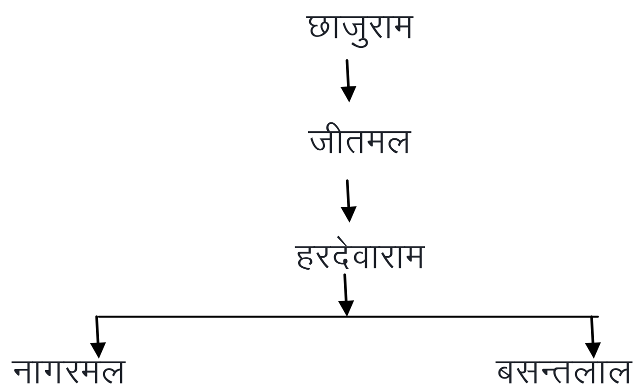
राधेश्याम चोटिया जो प्रतिभा नगर, चूरू में रहते हैं के पिताजी का नाम पुरूषोतम लाल है उनके दादाजी का नाम बालचन्द एवं बालचन्द के पिता का नाम नन्दराम तथा नन्दराम के पिता का नाम नाथूराम चोटिया बताया गया है। श्री राधेश्याम ने जानकारी दी कि चूरू से पहले चिराणा से 13 परिवारों का आना बताया गया है। चिराणा में शासक वर्ग के साथ किसी अनबन को लेकर स्थानापन्न होना पड़ा। वहाँ से चोटियो के तेरह परिवारों में

- रामेश्वरलाल (स्वागत साड़ी परिवार),
- नथमल चोटिया,
- नथमल चोटिया,
- रामाकिशन चोटिया आदि परिवारों का यहाँ आना बताया जाता है।

सुरेश जी चोटिया ने बताया कि हमारा परिवार चिराणा से पहले गोठड़ा जिला सीकर में रहा करता था। गोठड़ा से चिराणा आये एवं चिराणा से चूरू तथा एक परिवार चिराणा से लाडवी चला गया। श्रीलाल जी चोटिया, गंगाविशन, गोपाल चोटिया का परिवार लाडवी से चूरू आया हुआ है एवं वर्तमान में प्रतिभानगर में निवास कर रहा है।

लिखमीचन्द हीरानन्द के अकेली सन्तान थी। लिखमीचन्द के एक पुत्र हुआ जिसका नाम मालचन्द था। मालचन्द के भी एक पुत्र बनवारीलाल हुआ। बनवारी लाल का विवाह ठिमोली सावित्रीदेवी काछवाल के साथ हुआ। बनवारी लाल के दो पुत्र पवन कुमार एवं अरूणकुमार हुए। पवन कुमार के एक पुत्र गोपाल एवं अरूण कुमार अविवाहित रहा।

सुरेशकुमार चोटिया द्वारा अपने परिवार का वंश वृक्ष निम्न प्रकार से होना बताया –



बसन्तलाल के तीन पुत्र हुए रामोतार, महेशकुमार एवं सुरेशकुमार। नागरमल के संतान नहीं होने के कारण रामोतार नागरमल के गोद आये।

नन्दलाल चोटिया द्वारा चोटिया गोत्र के निवास आदि के बारे में बताया गया कि चोटिया परिवार के लोग चोटिया ग्राम में पैसों के लेनदेन का व्यापार करते थे एवं ग्राम के वोहरा थे, उस समय ग्राम में माँस की दुकाने भी नहीं थी। बताया जाता है कि ग्राम के ठाकुर के साथ पैसों के लेनदेन को लेकर विवाद होने पर रातों रात ग्राम छोड़ कर चूरू आ गये। चोटिया परिवारों ने ग्राम छोड़ते समय राम दरबार साथ लेकर आये इन मूर्तियों को झारिया मोरी के पास एक मंदिर का निर्माण करवाते हुए मूर्तियों की स्थापना करवाई।

नन्दलाल चोटिया के पिता का नाम मदनलाल है। परमेश्वरलाल, राधेश्याम, रामलाल, हरिप्रसाद, जगदीशप्रसाद, नंदलाल, विनोदकुमार के पिता का नाम मदनलाल है।

महामहोपाध्याय कवि चक्रवर्ति पंडित देवीप्रसाद शुक्ल ने बनारस में संवत् 1983 में मंगलमहर्षि चरितम नाम काव्य की रचना की। मुकुन्दगढ़ के श्री सांवलराम राष्ट्रसेवक ने मंगल चरितामृत नामक पुस्तक की रचना संवत् 1984 में की। रामगढ शेखावाटी के श्री सत्यनारायण चोटिया ने प्रातः स्मरणीय महर्षि मंगलदत्त जी महाराज नामक पुस्तक की रचना सन् 2004 में की। इसके अतिरिक्त रतनगढ की एक सामाजिक संस्था ने महर्षि मंगलदत्त विधालय का निर्माण किया तथा इसी नाम से एक विधालय नवलगढ़ में भी चलाया गया।

महर्षि मंगलदत्त का जन्म विक्रम संवत् 1865 के चैत्र शुक्ल दशमी को ग्राम गनेड़ी में हुआ था। महर्षि मंगलदत्त के पिता टोडरमल जी को जन्म पांचोता ग्राम में हुआ था परन्तु गनेड़ी के बाजौरिया सेठों द्वारा उनकी ज्योतिष विधा से प्रभावित होकर उन्हें गनेड़ी ले आये थे। महर्षि मंगलदत्त जब पाँच वर्ष के थे तो टोडरमल जी अपने

बड़े बेटे एवं छोटे पुत्र महर्षि मंगलदत्त को साथ लेकर हिसार के पास स्थित लाडवी ग्राम में बस गये। इस प्रकार टोडरमल जी ने अपने जीवनकाल में तीन ग्रामों का प्रवास किया और महर्षि मंगलदत्त आजीवन यायावर रहे। ग्यारह वर्ष की आयु में शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से निकले महर्षि मंगलदत्त का प्रथम पड़ाव किराणा के कृष्णदत्त जी, दूसरा पड़ाव कुरूक्षेत्र के हरिद्वारीलाल जी, तीसरा पड़ाव अमृतसर के गुलजारीलाल जी, चौथा पड़ाव जम्मू राजगुरू श्री हरिकृष्ण जी तथा पाँचवा व अंतिम पड़ाव पटियाला के राजगुरू वैराग्यराम जी के यहाँ शिक्षा ग्रहण करने में बिता। जो जिस विषय का पारंगत था उन्हीं की चरण सेवा करके व्याकरण षडदर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्मशास्त्र, वेदपुराण, उपनिषद आदि विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त कर विद्वान बने। इस प्रकार जीवन का पूर्वाद्ध विधा के अर्जन में बिताया और उतरार्द्ध विधा का प्रसार किया। पटियाला प्रवास के दौरान उनके साथ हुई एक घटना ने उनके जीवन को नई दिशा प्राप्त हुई। पटियाला के राजगुरू वैराग्यराम जी से शास्त्रार्थ हेतु दक्षिण के एक वृद्व संन्यासी पटियाला आये। महर्षि मंगलदत्त ने गुरू से आग्रह किया कि अपने स्थान पर मुझे शास्त्रार्थ का अवसर प्रदान करे। काफी आग्रह के बाद वैराग्यराम जी ने महर्षि मंगलदत्त को स्वीकृति प्रदान की। महर्षि मंगलदत्त ने वृद्व संन्यासी को शास्त्रार्थ में परास्त कर दिया। पराजित संन्यासी बहुत प्रसन्न हुए और सिर पर हाथ रखते हुए पूछा ''कहाँ के रहने वाले हो'' धन्य है वे माता पिता जिन्होनें तुम जैसी विभूति को जन्म दिया। महर्षि मंगलदत्त ने बताया कि जन्म गनेड़ी में हुआ और पुरा परिवार लाडवी में रह रहा है। संन्यासी ने कहा बेटा गनेड़ी से लेकर लाडवी तक का पूरा क्षेत्र अज्ञान के अन्धकार में डूबा हुआ हैं। मैं चाहता हुँ कि इस पूरे क्षेत्र में ज्ञान की लौ जलाकर इसे प्रकाशमान करो। यदि ऐसा कर सको तो मुझे वचन दो।

महर्षि मंगलदत्त ने वचन संन्यासी को वचन दिया। वृद्व संन्यासी को वचन देकर महर्षि मंगलदत्त अपने पिता के पास लाडवी आये और उन्हें अपने वचन से अवगत कराया। पिता ने कहा ''इसके लिए तुम्हें किसी न किसी सेठ से आर्थिक सहयोग की आवश्यकता होगी, तुम सबसे पहले भिवानी से अपना अभियान आरम्भ करो। उन दिनो इस क्षेत्र का सबसे बड़ा शहर भिवानी हुआ करता था। महर्षि मंगलदत्त ने शिक्षा के प्रसार का अभियान भिवानी से आरम्भ किया परन्तु आर्थिक सहयोग नहीं मिलने से पाठशाला नहीं चल पाई और वापिस पिता के पास लाडवी आना पड़ा। पिता ने अपने पुराने मित्र बाजौरिया सेठ से मिलने की सलाह दी। बाजौरिया सेठ उस समय लक्ष्मणगढ़ के बड़े व्यावसायी हो चुके थे। बाजौरिया सेठ ने जाते ही स्वीकृति दी और कहा इस शुभ कार्य में हमारा खजाना सदैव खुला है। इस प्रकार यायावर पाठशाला का लक्ष्मणगढ में विधिवत आरम्भ हुआ। पहला वर्ष लक्ष्मणगढ में ही बिता। लक्ष्मणगढ में जब चार पाँच छात्र ऐसे तैयार हो गये जो अपने दम पर पाठशाला का संचालन कर सकते थे तब महर्षि मंगलदत्त ने सेठ को अपने वचन के बारे में बताया। सेठजी ने अन्य स्थानों पर भी आर्थिक सहयोग का आश्वासन दिया परन्तु महर्षि मंगलदत्त नहीं चाहते थे कि एक ही व्यक्ति पर आर्थिक बोझ पड़े। अतएव उन्होनें छात्रों को भिक्षाटन

के लिए भेजना आरम्भ किया लेकिन केवल उन्हीं घरों में यज्ञोपवित धारण करने वाले हो। उन दिनो दादुपंथ का बहुत प्रचार हो रहा था जिसके कारण अनेक वैश्य यज्ञोपवित का त्याग कर चुके थे। इसी के चलते महर्षि मंगलदत्त ने सीकर के राव राजा का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया और रामगढ शेखावाटी के सेठ गुरसहायमल का भी प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। सेठ गुरसहायमल जी ने अपने दादुपंथी गुरू को महर्षि मंगलदत्त से शास्त्रार्थ करने के लिए कहा जब गुरू जरा भी नहीं टिक पाये तो यह बहाना बनाकर चले गये कि मैं अपने बून्दी स्थित गुरू निश्चलदास जी को शास्त्रार्थ के लिए भेजूंगा। निश्चलदास जी काफी दिनों तक नहीं आये और जब महर्षि मंगलदत्त बीकानेर के लिए रवाना हो गये तब निश्चलदास जी ने रामगढ आकर प्रचार किया कि मेरे आने का समाचार पाकर महर्षि मंगलदत्त पलायन कर गये। तभी सेठ को समाचार मिला की महर्षि मंगलदत्त बीकानेर नहीं बलिक चूरू में ही है। सेठ जी आज जहाँ चूरू की सब्जीमंडी है वहाँ जनसमुदाय की उपस्थिति में शास्त्रार्थ करवाया। निश्चलदास जी परास्त हो गये और कहासुनी पर उतारू हो गये परन्तु सेठ जी उलाहना देने पर बहाना बनाया कि मुझे गुरू का श्राप है कि मैं शास्त्रार्थ में विजयी नहीं हो सकता हुँ। महर्षि मंगलदत्त बोले जो योग्य शिष्य नहीं बन सका वह योग्य गुरू कैसे बन सकता है। फिर तो मानो सेठों में पुनः यज्ञोपवित धारण करने ही हौड़ सी लग गई। साथ ही महर्षि मंगलदत्त की पाठशाला हेतु आर्थिक सहयोग का रास्ता भी खुल गया और इस प्रकार यायावर पाठशाला का सिलसिला आरम्भ हुआ जो लगभग 80 बरसों तक चला, जिसमें वर्तमान राजस्थान के तीन जिले चूरू, सीकर तथा झूझुनूं और हरियाणा के चार जिले हिसार, भिवानी, सिरसा एवं महेन्द्रगढ़ में ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। इसका संचालन 25 बरसों तक स्वयं महर्षि मंगलदत्त ने किया। बावन बरस की अल्पायु में उनका शरीर शान्त होने पर कन्हैयालाल जी के पुत्र नन्दलाल जी ने इस श्रंखला को आगे बढ़ाया सात बरस बाद उनका भी निधन हो गया तो नन्दलाल जी के अनुज गिरधारीलाल जी ने कमान संभाली। अठाईस बरसों तक गिरधारीलाल जी ने यायावार पाठशाला का संचालन किया। गिरधारीलाल जी के निधन के बाद नन्दलाल जी के दत्तक पुत्र उमादत जी ने इस पाठशाला का 20 बरसों तक संचालन किया।

धीरे धीरे पाठशाला हेतु आर्थिक सहयोग मिलना कम हो गया और उमादत जी पर हजारों रूपयों का कर्ज हो गया जो उनके पुत्र पंडित विधाधरजी ने चुका तो दिया परन्तु साथ ही यायावर पाठशाला का समापन कर दिया। विधाधर जी के चार पुत्र हुए जिनमें से तीन पुत्र काशीराम, परशुराम एवं वासुदेव संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं। काशीराम जी ने भारतीय संविधान का संस्कृत में अनुवाद किया जिसके लिए केन्द्र सरकार ने उन्हें ताम्रपत्र से सम्मानित किया।

प्रतिभानगर चूरू में चोटिया परिवारों के कई घर हैं। उनमें से एक परिवार का विवरण निम्न है –

		रघुनाथराय		
		↓		
↓		↓		↓
नथमल		लक्ष्मीनारायण		नन्दलाल

लक्ष्मीनारायण चोटिया का विवाह अणचीदेवी के साथ हुआ। लक्ष्मीनारायण चोटिया के परिवार का विवरण निम्न प्रकार है।

लक्ष्मीनारायण चोटिया पुत्र रघुनाथराय		विश्वम्भरलाल – विश्वभरलाल का विवाह चूरू में जोशी परिवार में हुआ।
		सत्यभामा – सत्यभामा का विवाह चूरू में सोती परिवार में हुआ। सत्यभामा के पति का नाम फतेहचन्द सोती।
		सावित्री – विवाह चूरू में पीपलवा परिवार में हुआ। पती का नाम पुरूषोतम लाल पुत्र सुखदेव पीपलवा।
		यशोदा – का विवाह हनुमानप्रसाद के साथ।
		चन्द्रकला – का विवाह राधेश्याम पिपलवा के साथ रतनगढ।
		कौशल्या – का विवाह चूड़ी अजीतगढ गौरीशंकर के साथ।

विश्वम्भरलाल पुत्र लक्ष्मीनारायण चोटिया पुत्र रघुनाथराय का विवाह परमेश्वरीदेवी जोशी पुत्री भूरामल जोशी के साथ हुआ।		पवन कुमार
		जगदीशप्रसाद
		निरंजनकुमार
		सुरेन्द्र
		संजूकुमारी

बंशीधर चोटिया (डीड राईटर) प्रतिभानगर के परिवार का विवरण निम्न प्रकार है –

सदाराम		गोविन्दराम

गोविन्दराम		बंशीधर
		जुगलकिशोर

बंशीधर पुत्र गोविन्दराम पुत्र सदाराम बंशीधर का विवाह रतनगढ में केशरदेवी बणसिया के साथ		श्यामसुन्दर – कुंवारा
		विनोदकुमार – का विवाह रतनगढ़ रिणवां के
		सन्तोषकुमार – का विवाह रतननगर नोवाल के
		बबूलाल – का विवाह लक्ष्मणगढ मंगल्यारा के
		वेदप्रकाश – का विवाह लक्ष्मणगढ मंगल्यारा के
		शिवरतन – का विवाह लक्ष्मणगढ मंगल्यारा के
		नन्दकिशोर – का विवाह फतेहपुर जोशी के
		विमलादेवी – का विवाह रामगढ रूँथला के
		देवकी – का विवाह रामगढ बोचीवाल के
		सीतादेवी – का विवाह रामगढ रूँथला के
		उर्मिला – का विवाह रतननगर लढानिया के

जुगलकिशोर पुत्र गोविन्दराम पुत्र सदाराम		जुगलकिशोर के एक संतान हुई जिसका नाम सांवरमल

देवासर के चोटिया –

लादूराम चोटिया		हुकमाराम
		भजनलाल
		केशराराम

		कन्हैयालाल

हुकमाराम पुत्र लादूराम चोटिया वर्तमान में देवासर में रहते हैं।		

भजनलाल पुत्र लादूराम चोटिया वर्तमान में देवासर में रहते हैं।		

केशराराम पुत्र लादूराम चोटिया वर्तमान में स्वरूपदेसर में रहते हैं।		

कन्हैयालाल पुत्र लादूराम चोटिया वर्तमान में पल्लू में रहते हैं।		

दलूसर के चोटिया – दलूसर में रामप्रसाद चोटिया करीब 70 बरस पहले देवासर से उठकर आये। दलूसर में रामप्रसाद चोटिया का परिवार –

रामप्रसाद चोटिया		रामचन्द्र चोटिया
		जमना – जमना का विवाह लच्छीराम पिपलवा के साथ हुआ।

रामचन्द्र चोटिया पुत्र रामप्रसाद चोटिया		रामजीलाल
		बालूराम
		चिमादेवी – का विवाह उदरामसर रामकृष्ण माटोलिया के साथ।
		मोहनीदेवी – का विवाह उमाराम सेवदा के साथ रणसीसर में।
		नानूदेवी – रामेश्वरलाल सेवदा के साथ रणसीसर में।
		रतनादेवी – का विवाह जैतपुर में मालचन्द माटोलिया पुत्र मघाराम माटोलिया के साथ।
		बादूदेवी – का विवाह जैतपुर में भंवरलाल माटोलिया पुत्र मघाराम माटोलिया के साथ।

रामजीलाल पुत्र रामचन्द्र चोटिया पुत्र रामप्रसाद चोटिया रामजीलाल का विवाह रणसीसर में द्रोपदीदेवी के साथ सेवदा परिवार में। द्रोपदीदेवी के पिता का नाम बुधाराम सेवदा व बुधाराम के पिता का नाम रामचन्द्र सेवदा।		

बालूराम पुत्र रामचन्द्र चोटिया पुत्र रामप्रसाद चोटिया बालूराम का विवाह बादड़िया में रूघनाथ डीडवानिया की पुत्री गीतादेवी के साथ।		केशराराम – का विवाह कलावती पुत्री बुधाराम सेवदा के साथ रणसीसर में।
		भींयाराम – का विवाह बुकनसर बड़ा में गायत्रीदेवी पुत्री गणपतराम काछवाल के साथ।
		देवीलाल – का विवाह बुकनसर बड़ा में सीतादेवी पुत्री गणपतराम काछवाल के साथ।
		उंकारीदेवी – का विवाह रामसीसर भेड़वालिया में गोपालराम नोवाल के साथ।
		गंगादेवी –का विवाह राजपुरिया (लूणकरणसर) में शंकरलाल पुत्र नेमाराम जोशी के साथ।
		भंवरीदेवी – का विवाह राजपुरिया (लूणकरणसर) में ख्यालीराम पुत्र नेमाराम जोशी के साथ।

जौहरी सागर, चूरू के पास चोटिया

मालचन्द चोटिया मालचन्द चोटिया का परिवार झारिया ग्राम से चूरू आया।		बनवारीलाल
		भंवरलाल – का विवाह रतननगर माटोलिया परिवार में।
		भंवरीदेवी
		बनारसीदेवी
		राधादेवी

रूँथला

मेलूसर

मेलूसर के रूँथला पुरोहित कहलाते हैं। बताया जाता है कि रूँथला परिवार बीकानेर राजा रतनसिंह के शासनकाल में सीकर जिले के धानणी ग्राम से रतनगढ आये थे। रूँथला परिवारों ने अपने बृद्धिबल से बीकानेर राज दरबार में पौरोहित्व का पद प्राप्त कर लिया और बीकानेर राज दरबार की ओर से जमीनें भी रूँथला परिवारों को दी गई। मेलूसर ग्राम रूँथला परिवारों को जागीर में दिया गया जिसके कारण मेलूसर ग्राम मेलूसर पुरोहितान कहलाया। रूँथला परिवारों को मेलूसर के रूँथला कहा जाने लगा। मेलूसर पुरोहितान में रूँथला द्वारा अदभुत त्याग और बलिदान का परिचय दिया उस समय बीकानेर के शासक डूंगरसिंह बताये जाते हैं। कहा जाता है कि डूंगरसिंह ने अंग्रेजी हुकुमत के प्रभाव मे आकर बीकानेर दरबार की ओर से पूर्व में दी गई उदक माफी की जमीनों, जागीरों और भूमियों को यथापूर्व परम्परागत रूप से भोगताओं के अधिकार में रहने दी गई। साथ ही जिन भूमियों के हस्तान्तरण के पुख्ता प्रमाण नहीं हो उन्हें शासन के अधीन किये जाने के आदेश दिये गये। इस आदेश के प्रतिक्रिया स्वरूप रतनगढ एवं मेलूसर के रूँथला पुरोहितों ने अपूर्व त्याग और बलिदान का परिचय दिया और विरोध स्वरूप लगभग बीस–पच्चीस परिवार अपने बाल बच्चों सहित अपने द्वारा निर्मित एक विशाल कुण्ड में कूद कर जीवित आहूति दी थी। यह एक प्रकार नरमेघ था। इस भीषण नरमेघ का समाचार पाकर महाराज डूंगरसिंह के रौंगटें खड़े हो गये और उन्हें आधात पहुँचा और दीर्घकाल तक उनकी मनोस्थिति खराब रही। बताया जाता है कि डूंगरसिंह कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गये और कुष्ठ की व्याधि झेलते हुए वे अक्सर चिल्लाते थे कि मुझे मेलूसर के पुरोहित मार रहे हैं। इसी प्रकार रोते बिलखते महाराजा डूंगरसिंह का देहान्त हो गया।

गिनड़ी पट्टा लोहसणा में रूँथला परिवार रहता है। झाबरमल, नागरमल, कानीराम के पिता का नाम सूरजमल। झाबरमल के तीन पुत्र जिनमें से एक का तीन बरस की उम्र में देहान्त हो गया व दो पुत्र जिनके नाम तिलोकचन्द एवं बालुराम।

जौहरी सागर की आथूणी दिशा में वर्तमान में रूँथला परिवार रहते हैं, जानकारी लेने पर बताया गया कि सन् 1920 में रतनलाल रूँथला का परिवार मेलूसर पुरोहितान तहसील रतनगढ से चूरू आया। सन् 1920 का समय विश्व में प्लेग महामारी का समय था, उस समय बहुत लोग मारे गये एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर लोग सुरक्षित जगह की तलाश में गये।

ऊँकारमल　　रामदेव　　आत्माराम　　तोलाराम

रामदेव की संतानों का विवरण निम्न है –

रामदेव

ख्यालीराम　　सांवरमल　　विश्वनाथ　　नंदलाल

सूर्यकान्त

नहराणा के रूँथला

नहराणा के रूँथला परिवार

श्योजीराम (1)		सांवलराम
		रामचन्द्र

सांवलराम (2) पुत्र श्योजीराम		मूलचन्द
		जोधराम

रामचन्द्र (2) पुत्र श्योजीराम		चुन्नीलाल
		धनराज
		चतुर्भज
		हरदयाल

चुन्नीलाल (3) पुत्र रामचन्द्र पुत्र श्योजीराम		विमलकुमार
		कुरूक्षेत्र
		कोला
		चन्द्रकला
		निर्मला
		शकुन्तला

धनराज(3) पुत्र रामचन्द्र पुत्र श्योजीराम		वेदप्रकाश
		ललितकुमार
		सुरेन्द्रकुमार
		सुभाषकुमार
		जितेन्द्रकुमार
		शशिदेवी
		सीतादेवी
		इन्द्रादेवी
		चन्द्रमणी – विवाह चूरू
		सुमित्रादेवी

चतुर्भज (3) पुत्र रामचन्द्र पुत्र श्योजीराम		सुशीलकुमार
		ओमप्रकाश
		सुरेशकुमार
		रमेशकुमार
		सोमप्रकाश
		रविकुमार
		तारादेवी
		संतोषदेवी
		शारदादेवी।

हरदयाल (3) पुत्र रामचन्द्र पुत्र श्योजीराम हरदयाल का विवाह चरखी दादरी में लीलादेवी माटोलिया के साथ हुआ। नहराणा के हरदयाल रूँथला व मोमनराम रूँथला आपस में मौसी के बेटे भाई है। अर्थात इन दोनों के नाना का नाम एक ही है।		हेमादेवी
		प्रेमादेवी
		सावित्रीदेवी
		कमलादेवी
		सरोजदेवी
		पुष्पादेवी
		राजेन्द्रकुमार

मूलचन्द (3) पुत्र सांवलराम पुत्र श्योजीराम		जेठमल
		मोहनलाल
		शांति
		कल्लो
		तुलछा

जोधराज (3) पुत्र सांवलराम पुत्र श्योजीराम		जोगेन्द्र
		प्रकाश
		महेन्द्र
		श्रवण
		गोकुल
		भुगानी
		गुडी – विवाह धांगड़ में धर्मपाल के साथ।
		सावित्री

मोतीराम (1)		गंगाराम – पत्नी का नाम घोटादेवी
		खेताराम

गंगाराम (2) पुत्र मोतीराम		ईशरराम –
		मोमनराम
		अमरीदेवी – अमरीदेवी का विवाह मोहबतपुर की ढाणी (आदमपुर) के पोकरमल बढाढरा के साथ हुआ। अमरी के 2 लडके टेकचन्द व निहालचन्द व 3 लडकियां परमेश्वरी, घोटादेवी, ...

ईशराम (3) पुत्र गंगाराम (2) पुत्र मोतीराम पत्नी का नाम धापीदेवी रामसरा (हिसार) के चोटिया परिवार में। वर्तमान में सिरसा परिवार रहता है। ईशरराम ने अपने साले का लड़के सुलतान को गोद लिया।		सुलतान

मोमनराम (3) पुत्र गंगाराम पुत्र मोतीराम मोमनराम की पत्नी का नाम गंगादेवी। गंगादेवी मंगल्यारा का पीहर हिसार के पास लहरी ग्राम में। मोमनराम की हिसार में हलवाई की दुकान थी। नहराणा के हरदयाल रूँथला व मोमनराम रूँथला आपस में मौसी के बेटे भाई है। अर्थात इन दोनों के नाना का नाम एक ही है।		उमादेवी – उमादेवी का विवाह सिरसा में बलदेवराज जोशी पुत्र गंगाधर जोशी के साथ हुआ।
		लीलादेवी – लीलादेवी का विवाह रायपुर की ढाणी (हिसार) में वेदप्रकाश पुत्र मुखराम पीपलवा के साथ हुआ।
		विमलादेवी – विमलादेवी का विवाह टुण्डाखेड़ी में सतवीर माटोलिया के साथ हुआ।
		सरलादेवी – सरलादेवी का विवाह झाम्बर (हनुमानगढ) में रामकुमार पुत्र आदराम सेवदा के साथ हुआ।

		चन्द्रकला – चन्द्रकला का विवाह झाम्बर (हनुमानगढ) में रामकुमार पुत्र आदराम सेवदा के साथ हुआ।
		नत्थूराम – नत्थूराम का विवाह मेहरिया (हिसार) के माटोलिया परिवार में विधा पुत्री मोहनलाल माटोलिया के साथ।
		राधेश्याम – राधेश्याम का विवाह मेहरिया (हिसार) के माटोलिया परिवार में महादेवी पुत्री मोहनलाल माटोलिया के साथ। नत्थूराम व राधेश्याम की पत्नियाँ सगी बहने हैं।

खेताराम (2) पुत्र मोतीराम		हरचन्द

हरचन्द (3) पुत्र खेताराम पुत्र मोतीराम		रामस्वरूप (निःसन्तान) विवाह दिणोद डिडवानिया परिवार में
		मनोहरी – विवाह रामसरा (हिसार) चोटिया परिवार में
		लिछमा – विवाह ढाका की ढाणी (फतेहाबाद) माटोलिया परिवार में। पति का नाम देवतराम माटोलिया। लिछमा के 4 लड़के रमेश, घनश्याम, सहदेव, ... व 3 लड़की शारदा, भानी, धोलादेवी। शारदा का विवाह सिरसा में पीपलवा परिवार में, शारदा के ससुर का नाम घासीराम पीपलवा।

देवरोड़ के रूँथला

योगेश कुमार रूँथला का परिवार देवरोड़ में निवास करता है। इनका परिवार निम्बाहेड़ा (चित्तोड़गढ) से निकास होना बताया गया है।

पितराम रूँथला (1) पितराम का विवाह हरिचरण पिपलवा (देपालसर मंदिर के पुजारी) की दादी बुआ के साथ हुआ।		कनीराम
		श्रवणकुमार
		बीरबलराम
		मोहनलाल
		गोरधनराम
		रूकमादेवी – का विवाह रसूलपुर जोशी परिवार में।
		ज्यानादेवी – का विवाह रसूलपुर जोशी परिवार में बजरंगलाल जोशी के साथ।

कनीराम (2) पुत्र पितराम कनीराम को विवाह भोदण (सिंघाणा) बिदामीदेवी चोटिया के साथ।		केदारमल
		बलबीर
		धर्मपाल

बलबीर (3) पुत्र कनीराम पुत्र पितराम बलबीर का विवाह रसियाँ(उदयपुरवाटी) सुमित्रादेवी के साथ।		

धर्मपाल (3) पुत्र कनीराम पुत्र पितराम धर्मपाल का विवाह अजाड़ी खुर्द मैनादेवी जोशी के साथ।		

श्रवणकुमार (2) पुत्र पितराम श्रवणकुमार का विवाह लोटिया में भगवानीदेवी बढाढरा के साथ।		कृपादेवी – का विवाह सांवलोद (बुहाणा) मुरलीधरजी काछवाल के साथ।
		रमेशकुमार
		बाबूलाल
		मनोजकुमार

बिरबलराम (2) पुत्र पितराम बिरबलराम का विवाह ढाणा (भोदण सिंघाणा) शांतिदेवी चोटिया के साथ।		जयकरण
		ओमप्रकाश
		पवनकुमार
		कलावती –का विवाह रसूलपुर मंगलचंद जोशी के साथ।

रमेशकुमार (3) पुत्र श्रवणकुमार पुत्र पितराम रमेशकुमार का विवाह डांडमा (जूई के पास) भगवतीदेवी डीडवानिया के साथ।		

बाबूलाल (3) पुत्र श्रवणकुमार पुत्र पितराम बाबूलाल का विवाह जूई शकुन्तलादेवी डीडवानिया के साथ।		योगेशकुमार – का विवाह नरसिंगपुरा में सीताराम चोटिया की पुत्री वर्षा के साथ।
		संजयकुमार का विवाह मारिगसर शंकरलाल चोटिया की पुत्री अनिता के साथ।

मनोजकुमार (3) पुत्र श्रवणकुमार पुत्र पितराम मनोजकुमार का विवाह डांडमा सुमित्रादेवी पिपलवा के साथ।		

जयकरण (3) बिरबलराम पुत्र पितराम जयकरण का विवाह बड़ाऊ जोशी परिवार में।		

ओमप्रकाश (3) बिरबलराम पुत्र पितराम ओमप्रकाश का विवाह बड़ाऊ प्रेमादेवी जोशी के साथ।		

पवनकुमार (3) बिरबलराम पुत्र पितराम पवनकुमार का विवाह ककराणा सुनितादेवी के साथ।		

मोहनलाल (2) पुत्र पितराम मोहनलाल का विवाह रसूलपुर शारदादेवी जोशी के साथ।		प्रवीणकुमार
		दिनेशकुमार
		रामावतार

प्रवीणकुमार (3) पुत्र मोहनलाल पुत्र पितराम प्रवीणकुमार का विवाह इन्द्रमणी जोशी के साथ।		

दिनेशकुमार (3) पुत्र मोहनलाल पुत्र पितराम दिनेशकुमार का विवाह डांडमा में सुमनदेवी पिपलवा के साथ।		

रामावतार (3) पुत्र मोहनलाल पुत्र पितराम रामावतार का विवाह		

गोरधनराम (2) पुत्र पितराम गोरधनराम का विवाह रसूलपुर सन्तोषदेवी जोशी के साथ।		कमलेशकुमार
		महेशकुमार
		रविदत्त

कमलेशकुमार (3) पुत्र गोरधनराम पुत्र पितराम कमलेशकुमार का विवाह स्यालू (चिड़ावा) नंदलाल जोशी की पुत्री मंजूदेवी के साथ।		

महेशकुमार (3) पुत्र गोरधनराम पुत्र पितराम महेशकुमार का विवाह खींवासर (गुढा के पास)		

रविदत्त (3) पुत्र गोरधनराम पुत्र पितराम रविदत्त का विवाह खींवासर (गुढा के पास)		

झिखनाड़िया परिवार

चूरू शहर के प्रतिभानगर में शंकरलाल जी झिखनाड़िया का परिवार रहता है, इनके पिता का नाम पंडित कालीचरण जी शास्त्री है। शंकरलाल का जन्म 16 जुलाई,1934 को हुआ दूसरे नंबर के भाई का नाम श्यामलाल जिनका जन्म 02 अगस्त,1938 को एवं तीसरे नंबर के भाई का नाम रामचन्द्र है। रामचन्द्र का जन्म 05 सितम्बर, 1937 को हुआ एवं स्वर्गवास 16 फरवरी,2018 चूरू में हुआ। रामचन्द्र जी एवं श्यामलाल जी राजकीय सेवा में अध्यापक पद पर थे। पंडित कालीचरण जी शास्त्री के पिता नाम हरदेव दत है। हरदेवदत के तीन पुत्र हुए शोभाराम, दूदाराम एवं पंडित कालीचरण जी शास्त्री। शोभाराम के पुत्र संतान नहीं हुई। विजय कुमार नोवाल शोभाराम को दोहिता है। दूदाराम के चार संतान हुई गिरधारीलाल, उंकारमल, श्रीलाल एवं रामेश्वरलाल। हरदेवदत के पिता का नाम बलदेवदत है। बलदेवदत के तीन पुत्र हुए हरदेवदत, डूंगरमल एवं पूर्णमल। गिरधारीलाल हरदेवदत के भाई पूर्णमल के गोद चले गये। हरदेवदत के बारे में शंकरलाल जी बताते हैं कि एक बार मेरे दादोजी रेल से यात्रा कर रहे थे उनके पास प्याज थे। डिब्बे में टीटी आया और कहने लगा तुम्हारे पास क्या है, गंध आ रही है तो हरदेवदत जी चलती ट्रेन से नीचे कूद गये।

शंकरलाल जी का कहना है कि हम झारिया ग्राम से आये हैं। उस समय झारिया से हरदेवदत आये। झारिया के ठाकुर से अनबन होने के कारण झारिया छोड़कर चूरू आये। चूरू आकर सारड़ा के नोहरे में आकर रूके। हरदेवदत चूरू शहर में पलदारी का काम करते। हमारा निकास चिराणा की ढाणी बताया जाता है। चिराणा की ढाणी से झारिया और भैंरूसर आकर बसे। भैंरूसर ग्राम को डूंगरमल ने छोड़ा था। सारड़ा के नोहरे में हरदेवदत जी बीमार हो गये, तो सेठ घबराये कि पंडित अगर यहीं शरीर छोड़ देता है तो खर्च पाणी करना होगा। बात हरदेवदत जी के पास आई तो उन्होनें परिवारजनों को कहा मुझे यहाँ से मेरी जमीन में छान के नीचे ले चलो, छान की छाया में उन्हौंनें प्राण त्याग दिये। यह जमीन हरदेवदत जी ने भूरामल पीपलवा से खरीदी थी।

भंवरलाल पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया का परिवार वर्तमान में चूरू शहर की पश्चिमी दिशा में रहता है। भंवरलाल झिखनाड़िया का परिवार झारिया ग्राम से चूरू आना बताया गया है। भंवरलाल झिखनाड़िया के परिवार का विवरण इस प्रकार है –

<table>
<tr><td rowspan="8">केशरदेव झिखनाड़िया</td><td rowspan="8"></td><td>भंवरलाल</td></tr>
<tr><td>भोलाराम</td></tr>
<tr><td>श्रवणकुमार</td></tr>
<tr><td>बुधकरण</td></tr>
<tr><td>पवनकुमार</td></tr>
<tr><td>घनश्याम</td></tr>
<tr><td>गायत्रीदेवी – घांघू के सेवदा परिवार में।</td></tr>
<tr><td>शारदादेवी – घांघू के सेवदा परिवार में।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="4">भोलाराम पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया

विवाह बिसाऊ के चोटिया परिवार में।</td><td rowspan="4"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="4">श्रवणकुमार पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया

विवाह सरदारशहर के चोटिया परिवार में।</td><td rowspan="4"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

<table>
<tr><td rowspan="4">बुधकरण पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया

विवाह थैलासर नोवाल परिवार में।</td><td rowspan="4"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

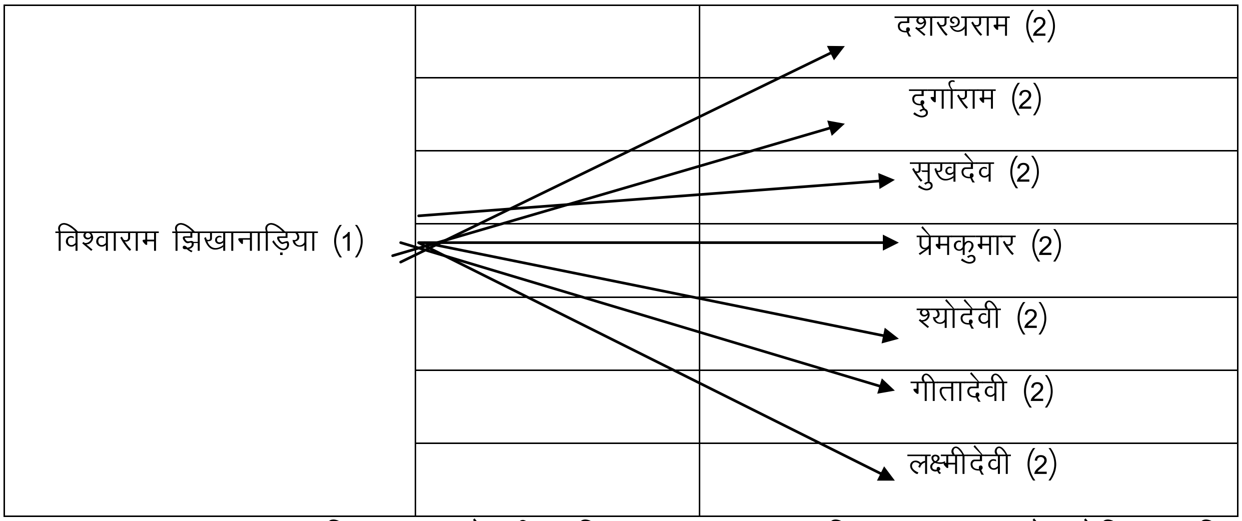
<table>
<tr><td rowspan="2">पवनकुमार पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया

विवाह फतेहपुर के चोटिया परिवार में।</td><td rowspan="2"></td><td></td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

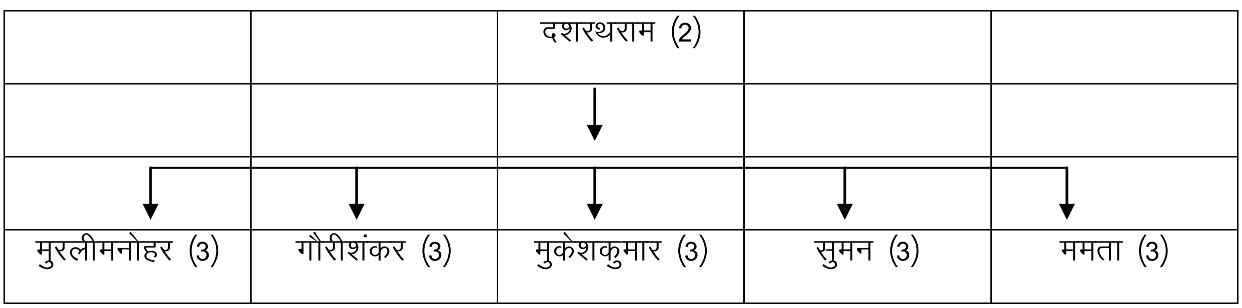
घनश्याम पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया विवाह रतनगढ के चोटिया परिवार में।		

भंवरलाल पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया भंवरलाल का विवाह धोधलिया ग्राम में जोशी परिवार में भगवानीदेवी पुत्री रामकुमारजी जोशी के साथ हुआ।		जगदीश

चूरू तहसील के ग्राम कोटवाद नाथोतान में वर्तमान में झिखनाडिया परिवार रहते हैं। कोटवाद नाथोतान के झिखनाडिया परिवार पहले चूरू में रहते थे।



दशरथराम पुत्र विश्वाराम के तीन विवाह हुए। प्रथम विवाह दलूसर में चोटिया परिवार में एवं दूसरा विवाह चूरू के चोटिया परिवार में। प्रथम दोनों पत्नियों से कोई संतान नहीं हुई तथा तीसरा विवाह बिसाऊ में जोशी परिवार में चन्दादेवी पुत्री मदनलाल के साथ हुआ।



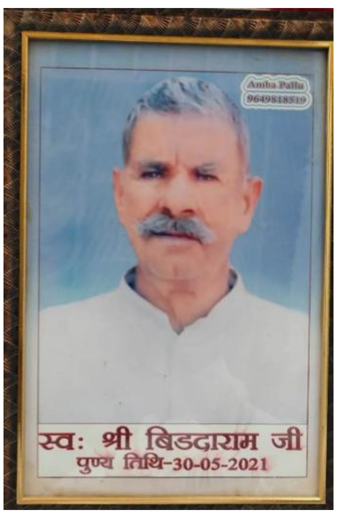
- मुरलीमनोहर का विवाह खरींटा (रामगढ) चोटिया परिवार में। पत्नी का नाम भगवती पुत्री परमेश्वरलाल।
- गौरीशंकर का विवाह सुजानगढ बोचीवाल परिवार में। पत्नी का नाम संगीता।
- मुकेश कुमार का विवाह पीपली (सुरजगढ) चोटिया परिवार में। पत्नी का नाम रैना पुत्रर प्रेमप्रकाश।
- सुमन का विवाह सरदारशहर चोटिया परिवार में। सुमन के पती का नाम विनोदकुमार पुत्र लक्ष्मीनारायण।
- ममता का विवाह चोटिया परिवार में मारीठाणा (झूंझूनू) इन्द्रपाल पुत्र मनीराम के साथ हुआ।

गोलवा – गोलवा और सोती गोत्र की कुलदेवी जमुवाय माता है। हनुमानगढ के ग्राम स्वरूपदेसर में गोलवा परिवार पाये जाते हैं। गोलवा परिवार बताते हैं कि जहाँ तक उनको जानकारी है सीकर सालासर मार्ग पर स्थित फागलवा ग्राम में



रहते थे। फागलवा से सरदारशहर एवं सरदारशहर से हनुमानगढ तथा हनुमानगढ सें जैतपुर आये तथा जैतपुर से स्वरूपदेसर में निवास कर रहे हैं।

ग्राम स्वरूपदेसर में गोलवा परिवार में शेराराम गोलवा प्रमुख व्यक्ति थे। शेराराम गोलवा के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम बिड़दीचन्द गोलवा है। बिड़दीचन्द गोलवा का स्वर्गवास 30 मई 2021 को हुआ।



सोती –

खंडेलवाल वैश्य एवं ब्राम्हण इस स्थान के मूल निवासी कहे गये हैं। बताया जाता है कि विक्रम संवत् 500 में लोहार्गल में सोती परिवार रहते थे। सोती परिवारों का खण्डेला से चौकड़ी ग्राम विक्रम संवत् 800 के आसपास आना बताया गया है। चला और चौकड़ी दो ग्राम हैं जो नीम का थाना के पास स्थित है। चोहान नरेश राजा पृथ्वीराज चौहान के पूर्वज काफी संख्या मे धारा नगरी उज्जैन से निकल कर अजमेर आये थे और यहाँ के राजा बने । मोहम्मद गौरी से युद्ध के बाद राज परिवारो के गुर्जर चौहानो को अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए अजमेर से पलायन करना पड़ा। और वो आगे स्थान परिवर्तन करते रहे । चोहान गुर्जर पहले पहुँचे चला चौकड़ी नामक गाँव् मे जो कि नीम का थाना (सीकर) में है । वहाँ से फिर आगे गढ़ी गाँव् अलवर मे रुके लेकिन अधिकतर राजस्थान से दूर सहारनपुर से आगे चले गये और कुछ ने आखिर में गौत्र बदल कर चौहानो से चौकन बन कर मँगलेसर माज्जरी मे स्थाई निवास बनाया जो कि हरियाणा और राजस्थान बोर्डर शाहाबाद से उल्टे हाथ पर अंदर जाकर है। आज भी वहाँ पर चौकन (चौहान) गुर्जरों के 12 गाँव है।

चला चौकड़ी से विक्रम संवत् 1500 के आसपास रवाना होकर सोती परिवार दुणायचा ग्राम जो वर्तमान में अलवर जिले में हैं। दुणायचा में सोती परिवारों निवास स्थान रहा एवं आज भी यहाँ सोती परिवार रहते हैं एवं इन्हीं में से एक परिवार विक्रम संवत् 1735 में जुई जिला भिवाणी चला गया। जुई में सोती परिवार का अधिक समय तक रहना नहीं हुआ। जुई से सोती लोटिया ग्राम आये। बताया जाता है कि सेवाराम पुत्र डालूराम का जुई से लोटिया आना हुआ।

सोती गोत्र का मूल हुकुमपुरा में सोती गोत्र के परिवार रहते हैं। हुकुमपुरा ग्राम सोती परिवारों का एक मुख्य ठहराव होकर इस स्थान से उनका अन्यत्र निकास है। हुकुमपुरा ग्राम गुढा तहसील का एक ग्राम है एवं झुंझुनूं गुढा मार्ग की एप्रोच रोड़ के पूर्व में तीन किलोमीटर दूर स्थित है। हुकुमपुरा एक प्राचीन ग्राम है। हुकुमपुरा में आज भी सोती परिवार रहते हैं। हुकुमपुरा ग्राम जयपुर राज घराने का एक भाग होकर इस क्षेत्र में शेखावतों का प्रभुत्व रहा है। जमुवाय माता इस क्षेत्र की कुलदेवी है। शेखावत राजपूतों की कुलदेवी जमुवाय माता है एवं खण्डेलवाल गोत्र में सोती एवं गोलवा परिवारों की कुलदेवी भी जमुवाय माता है अर्थात सोती गोत्र की कुलदेवी जमुवाय माता होना यह जानकारी देता है कि सोती परिवार हुकुमपुरा ग्राम में कई शताब्दियों से रह रहे हैं। जमुवाय माता का मंदिर गुढा से पूर्व दिशा में भौंड़की के जोहड़ में स्थित है।

हुकुमपुरा ग्राम में राधेश्याम सोती का परिवार रहता है। राधेश्याम से मिलना हुआ। सोती गोत्र के बारे में जानकारी लेने एवं सोती परिवार का चूरू आगमन का कारण जानने पर उनके द्वारा यह बताया गया कि मेरे दादोजी मंगलचन्द का विवाह चूरू के चोटिया परिवार में हुआ। चूरू के चोटिया परिवार से मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई कि भगवानदास बागला के मुनीम लिखमीचन्द चोटिया की बहन का विवाह सोती परिवार में हुआ था एवं बारात हुकुमपुरा

से चूरू गई थी। इसी संदर्भ में प्रकाशचन्द्र सोती का कहना है कि धनराज जी सोती का विवाह लिखमीचन्द जी चोटिया (मुनीमजी) की बहिन के साथ हुआ था। इस बात की संभावना है कि धनराज सोती एवं मंगलचन्द सोती दोनों का विवाह चूरू के चोटिया परिवार में हुआ हो। लिखमीचन्द जी चोटिया (मुनीमजी) के जन्म एवं स्वर्गवास की तारीख की जानकारी के संबंध में मुझे भगवानदास बागला का जीवनी वृतान्त तैयार करते समय का किस्सा याद आ रहा है कि भगवानदास बागला की पत्नी बरजीदेवी (बृजकुमारी) का देहान्त चैत्र सूदी दूज संवत् 1973 को रंगून में हुआ था। ठाकुर साहब चन्द्रसिंह जी शेखावत खिजड़ोलिया ने बताया कि सेठाणी के जाने के अगले साल मुनीमजी का देहान्त हो गया, अर्थात लिखमीचन्द जी का देहान्त संवत् 1974 (सन् 1917) में हुआ था।

राधेश्याम सोती से जब मैंनें यह प्रश्न पुछा कि हुकुमपुरा से चूरू 84 किलोमीटर दूर है, उस समय आवागमन आदि के सीमित साधन एवं जटिल यात्रा परिवेशों के कारण इतनी दूरी तय कर वैवाहिक संबंध स्थापित करना कहाँ तक उचित था, इस पर उनके द्वारा जो जवाब दिया गया उससे मैं सन्तुष्ट था। उस समय वैवाहिक संबंध दूर दूर ही किये जाते थे ताकि एक स्थान पर जीवन की जटिल स्थितियाँ जैसे अकाल की विभीषिका, सत्ता की क्रूरता आदि के कारण उस स्थान को छोड़ते हुए दूर स्थान पर जाकर जीवन बचाया जा सके और रिश्तेदारी के कारण वहाँ रहना सरल हो सके।

हुकुमपुरा ग्राम से चूरू का रास्ता उस समय पैदल ही तय किया जाता था एवं दो तीन दिन में तय कर लिया जाता था। व्यक्तियों का रहवास राज परिवार अथवा सत्ता के साथ रिश्ते, आजीविका, साधनों की सुलभता व चाकरी पर निर्भर रहता था। सोती परिवारों के बारे में जानकारी प्राप्त होकर मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि खाण्डल वंश में सोती गोत्र का ठहराव हुकुमपुरा में लंबे समय रहा है। हुकुमपुरा से पूर्व सोती परिवारों का कहीं निवास स्थान होना किसी दस्तावेजी जानकारी में नहीं आया है एवं ना ही कोई सोती परिवार एवं उससे संलग्न घटनाओं का इससे पूर्व का कहीं जिक्र मिला है। जल संग्रहण संरचनाओं, धर्मशालाओं, भवनों आदि पक्के निर्माणों में उनके नाम की पट्टिकाओं में सोती परिवार के नाम का उल्लेख मुझे प्राप्त नहीं हुआ है।

हुकुमपुरा ग्राम की भौगोलिक एवं ग्राम का प्राकृतिक परिवेश जीवनयापन के अनुकूल होने के साथ–साथ ग्राम में आज भी पुराने भवन नजर आते हैं जो ग्राम के प्राचीन होने के बारे में बताते हैं। जानकारी यह भी मिलती है कि हुकुमपुरा के सोती परिवार हुकुमपुरा से पूर्व गुढा में निवास करते थे एवं गुढा से पहले खण्डेला में रहते थे। वर्तमान में गुढा में कोई सोती परिवार निवास नहीं करता है। खण्डेला से खाण्डल गोत्रों का एक काल खण्ड में निवास करना एवं माईग्रेशन सिद्ध हुआ है। इस विचार अथवा तथ्य में सच्चाई नजर आती है, क्यों कि खण्ड प्रदेश में खण्डेला का मुख्य नगर होना एवं इस स्थान से किसी कारण से खण्डेला के निवासियों का निकास किसी अमानवीय घटना का कारण हो सकती है, यह अलग प्रश्न है

जिसका जवाब शेष है। खण्डेलवाल परिवारों के मूल निवास के संबंध में मेरे द्वारा एकत्रित की गई जानकारियों में प्रत्येक खाण्डल गोत्र खण्डेला तक जाता है।

खण्डेला और हुकुमपुरा दोनों की बसावट का अध्ययन किया जावे तो एक बात स्पष्ट होती है कि खण्डेला इस क्षेत्र के केन्द्र में था एवं आसपास के क्षेत्र के निवासियों की बस्तियों के साथ पारस्परिक संबंध थे जो उनकी भवनों की निर्माण शैली से जाहिर होते हैं। खण्डेला की व्यापारिक वैभवता आसपास के ग्रामों में नजर आती है। खण्डेला की मंडी में होने वाले व्यापार के ग्राहक एवं भागीदारी के प्रमाण गलियों में गौर से देखने पर कहीं कहीं दिख जाते हैं।

हुकुमपुरा ग्राम से सोती परिवार निकास के बारे में यह जानकारी मिली की इस ग्राम से

- भादरमल सोती का परिवार नवलगढ चला गया है।
- मंगलचन्द के दो पुत्र मालीराम एवं घासीराम हुए तथा मालीराम के दो पुत्र राधेश्याम एवं श्यामसुन्दर हुए।
- वर्तमान में हुकुमपुरा ग्राम में 20 सोती परिवार रहते हैं।
- झुंझुनूं में सोती परिवार की बरतन की दुकान है।
- जूई (लुहारा एवं भिवानी के मध्य ग्राम है) में सोती गोत्र के 15 से 20 परिवार निवास करते हैं।
- तोलियासर (झुंझुनूं) में शेखसर के पास सोती परिवार का एक घर है।
- सोती परिवार में हुणताराम जी अपने पिता के एक पुत्र हुआ एवं हुणताराम जी के एक संतान पन्नालाल हुआ। पन्नालाल के तीन पुत्र हुए धनाराम, मंगलचन्द व हड़मानाराम। हड़मानाराम के कोई संतान नहीं हुई।
- ग्राम में जस्सूराम सोती रहा करते थे। जस्सूराम के दो पुत्र महेश कुमार एवं विश्वनाथ का परिवार आसाम में निवास करता है।
- ईश्वरलाल सोती बिजली विभाग में एकाउन्टेट पद पर है। ईश्वरलाल सोती के पिता का नाम नागरमल सोती है। नागरमल सोती के पिता का नाम मंगलचन्द सोती है। भूराराम, भगवानाराम, भागीरथमल, नागरमल, मंगलचन्द एवं हरदेवाराम ये 6 भाई जिनके पिता का नाम रामचन्द्र है। रामचन्द्र के पिता का नाम हुणताराम है।
- सत्यनारायण के पिता का नाम भागीरथमल एवं भागीरथमल के पिता का नाम रामचन्द्र है। सत्यनारायण के 7 पुत्र छगनलाल, भरतलाल, पूर्णमल, महेन्द्र, शंकरलाल, योगेश एवं सुभाष हैं।
- हुकुमपुरा ग्राम में देवीदत सोती रहा करते थे। देवीदत के एक ही पुत्र दयालाराम एवं दयालाराम एक ही पुत्र महादेव प्रसाद एवं महादेव प्रसाद के पुत्र ग्यारसीलाल,

ओमप्रकाश, गोविन्द एवं विनोद कुमार। दयालाराम सोती का विवाह चूरू के जगनाथ चोटिया की बहिन के साथ हुआ।

चूरू शहर में प्रकाशचन्द्र सोती अध्यापक रहते हैं। प्रकाशचन्द्र के पिता का नाम सत्यनारायण है। प्रकाशचन्द्र के दो बहिनें प्रेमलता एवं हेमलता है। सत्यनारायण सोती का स्वर्गवास 17 जनवरी,1972 को हुआ। प्रकाशचन्द्र सोती परिवार का वंश वृक्ष निम्न है।

गणपतराम → महावीर प्रसाद
गणपतराम → सत्यनारायण
गणपतराम → पुष्पा

गणपतराम सोती के पिता का नाम धनराज। धनराज सोती के पिता का नाम पन्नालाल सोती है। प्रतिभानगर में रहने वाले परमानन्द सोती भी प्रकाशचन्द्र के परिवार की खांप से है। प्रकाशचन्द्र सोती ने जानकारी दी कि हुकुमपुरा से धनराज सोती आये। हुकुमपुरा में श्याम जी सोती हमारे पड़ दादा के परिवार की पिढ़ी में है।

फतेहचन्द सोती का परिवार बिसाऊ से चूरू आया है। संजय कुमार सोती चैन्नई में रहते हैं जो मूलतः फतेहपुर से हैं।

लोटिया ग्राम के सोती

लोटिया ग्राम के बारे में बताया जाता है कि यह ग्राम संवत् 1205 में खरड़िया ग्रोत्र के जाटों द्वारा बसाया गया। लोटिया ग्राम के सोती परिवारों द्वारा अपनी कुलदेवी शाकम्बरी बताया गया एवं उपदेव गणेश। सोतियों के खेड़ा के बारे में बताया गया कि खेड़ा ग्राम की रिहाईश (लाल डोरा) से बाहर के निकटवर्ती क्षेत्र को कहा जाता है। खंडेलवाल वैश्य एवं ब्राम्हण इस स्थान के मूल निवासी कहे गये हैं। बताया जाता है कि विक्रम संवत् 500 में लोहार्गल में सोती परिवार रहते थे। सोती परिवारों का खण्डेला से चौकड़ी ग्राम विक्रम संवत् 800 के आसपास आना बताया गया है। चला और चौकड़ी दो ग्राम हैं जो नीम का थाना के पास स्थित है। चोहान नरेश राजा पृथ्वीराज चौहान के पूर्वज काफी संख्या मे धारा नगरी उज्जैन से निकल कर अजमेर आये थे और यहाँ के राजा बने । मोहम्मद गौरी से युद्ध के बाद राज परिवारो के गुर्जर चौहानो को अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए अजमेर से पलायन करना पड़ा। और वो आगे स्थान परिवर्तन करते रहे । चौहान गुर्जर पहले पहुँचे चला चौकड़ी नामक गाँव् मे जो कि नीम का थाना (सीकर) में है। वहाँ से फिर आगे गढ़ी गाँव् अलवर मे रुके लेकिन अधिकतर राजस्थान से दूर सहारनपुर से आगे चले गये और कुछ ने आखिर में गौत्र बदल कर चौहानो से चौकन बन कर मँगलेसर माज्जरी मे स्थाई निवास

बनाया जोकि हरियाणा और राजस्थान बोर्डर शाहाबाद से उल्टे हाथ पर अंदर जाकर है। आज भी वहाँ पर चौकन (चौहान) गुर्जरों के 12 गाँव है।

चला चौकड़ी से विक्रम संवत् 1500 के आसपास रवाना होकर सोती परिवार दुणायचा ग्राम जो वर्तमान में अलवर जिले में हैं। दुणायचा में सोती परिवारों निवास स्थान रहा एवं आज भी यहाँ सोती परिवार रहते हैं एवं इन्हीं में से एक परिवार विक्रम संवत् 1735 में जुई जिला भिवाणी चला गया। जुई में सोती परिवार का अधिक समय तक रहना नहीं हुआ। जुई से सोती लोटिया ग्राम आये। बताया जाता है कि सेवाराम पुत्र डालूराम का जुई से लोटिया आना हुआ। एक परिवार जुई में ही रह गया एवं एक परिवार जुई से चंदा का बास चला गया।

ठाकुर सुरजनसिंह जी शेखावत की पुस्तक खण्डेला का वृहत इतिहास एवं शेखावतों की वंशावली की पुस्तक के पेज संख्या 27 पर यह उल्लेख किया गया है कि खण्डेला में बहुजी की बावड़ी में लेख है जिसमें यह लिखा गया है कि '' श्री रामजी, सिधश्री महाराज श्री बाहदुरसिंह जी की रानी बहूजी श्री गौडी राजश्री स्योरामजी की बेटी राजश्री केसरीसिंहजी माँ–बाप कराई पूरी हुई कमैतीसीं अखेराम मोकलदास व पोद्दार दरोगो मीया दोलाखा सुलेमान का बेटा चेजारो धरमो पीथा का बेटा लीखत हरीनाथ रामदास का संवत् 1749 का मिती बैसाख सुदि 10 । संवत् 1749 अर्थात सन् 1692 । इसी प्रकार बनवारीलाल सोती से प्राप्त बही भाट की बही की नकल में यह बताया गया है कि खंडेला में विक्रम संवत् 1702 (सन् 1645) में अर्थात ''खंडेला, सोतियों का खेड़ा, सांगानेर, चला चौकड़ी में विक्रम संवत् 1702 (सन् 1645) में हरनाथ सोती''।

उपरोक्त तथ्यों एवं वर्षवार दो भिन्न स्थितियों के संयोजन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बहादुरसिंह जी के समय हरनाथ नाम का व्यक्ति था जिसके पिता का नाम रामदास था एवं हरनाथ द्वारा बहूजी की बावड़ी में अपने हाथ से यह तहरीर लिखी गई थी, जैसा कि अभिलेखों में तहरीर अधिकतर स्थानों पर ब्राम्हण द्वारा ही लिखाई जाती थी।

रामदास

↓

हरनाथ (1)

(बहूजी की बावडी में संवत् 1749 का मिती बैसाख सुदि 10 सन् 1692 अभिलेख में नाम)

↓

गोमजी (गोपीनाथ) (संवत् 1890 सन् 1823) सूरजगढ आना (2)

↓

सेवाराम (1)

- रामुराम (2)
- धनाराम (2)
- डालूराम (2)
- हीरालाल (2)
- उमेदराम (2)
- रेखाराम (रामरख) (2)

बताया जाता है कि धिंगाणिया ग्राम की माटोलण सेवाराम की माँ थी। सेवाराम जब गोद में ही था तब सेवाराम के पिता का देहान्त हो गया था।

मक्खनलाल सोती का कहना है कि बनवारीलाल सोती डालूराम के परिवार के भाईपे में है। अर्थात डालूराम का कोई एक भाई है।

रेखाराम (रामरख) (2)

↓

रूपराम (3)

(रूपराम की घरवाली मक्खनलाल की पड़ दादी है जिसका स्वर्गवास संवत् 1969 सन् 1912 में हुआ)

- रामप्रसाद (4)
- भूराराम (4)
- दो लड़की दोनों की चिड़ावा शादी चोटिया परिवार में

रामप्रसाद का स्वर्गवास 1921 के आसपास प्लेग के कारण कलकते में हुआ। रामप्रसाद का विवाह भावठडी सुहास के पास हुआ तथा उनकी पत्नी का स्वर्गवास रामप्रसाद के जाने के 6 माह बाद हुआ। रामप्रसाद

भूराराम / रूपराम (4)

- भगवानी
- रामकुमार
- सारां
- मदनलाल
- परमेश्वर

रामकुमार की स्वर्गवास 20 दिसम्बर,1990 को हुआ। रामकुमार की शादी 12 बरस की उम्र में हुआ तथा 82 बरस की उम्र में देहान्त हुआ। भगवानी की शादी मन्ड्रेला माटोलिया के। रामकुमार का विवाह मिती आषाढ बदी 9 संवत् 1979 को जोशी रसूलपुर परिवार में हुआ। सारां का विवाह नरसिंगपुरा रूँथला। नरसिंगपुरा में रूँथला का एक ही घर था। फुफो होद से रूँथला के गोद आये। फूफा का नाम भागीरथ।

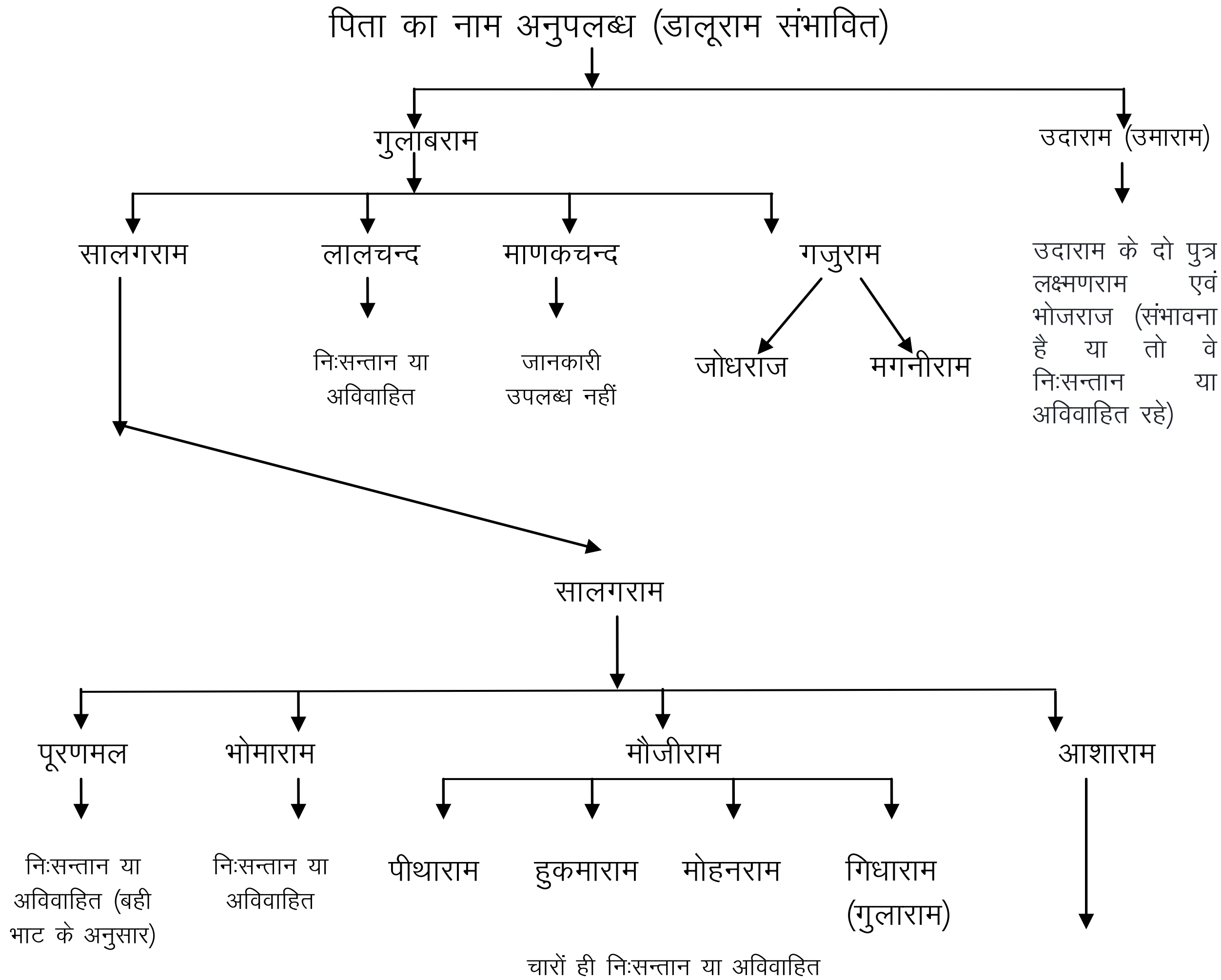
मदनलाल का विवाह बीगोदरां की ढाणी चिड़ावा के पास चोटिया के हुआ तथा परमेश्वर का विवाह बगड़ काछवालां के।

रामकुमार / भूराराम (5)

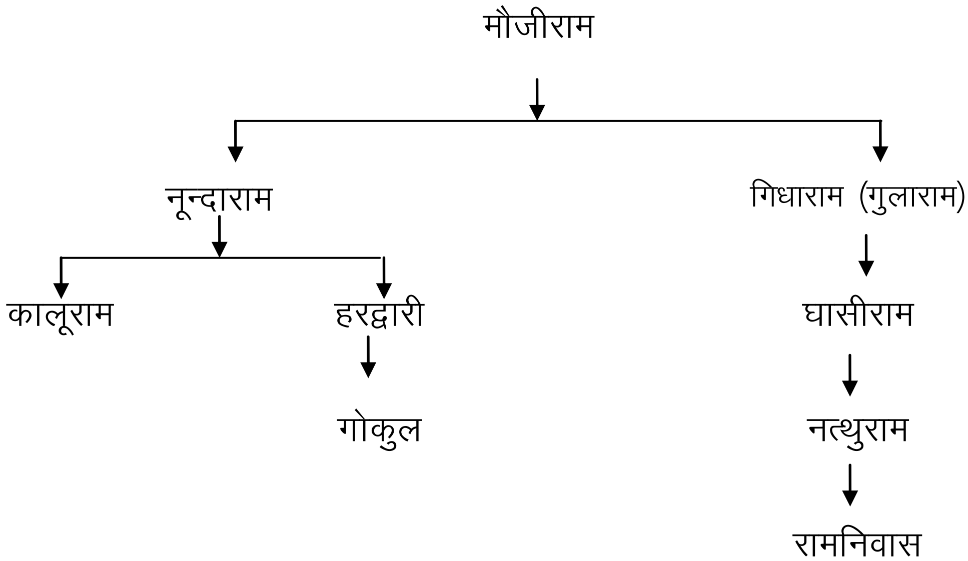
शांतिदेवी (6)	ग्यारसी (6)	बजरंगलाल (6)	शुभकरण (6)	गिन्नीदेवी (6)	मक्खनलाल (6)	मुरारीलाल (6)	चम्पादेवी (6)
श्यामा की ढाणी डीडवाणियां के	पिलानी रूँथला के	पिलानी रूँथला के दो पुत्र व एक पुत्री	भादरा पीपलवा के सूरज, मीतू व नीरव	ढाणी लक्ष्मण माटोलिया के	चिड़ावा चोटियां के। मक्खनलाल वर्तमान में	जयपुर में डाक्टर दो पुत्र मयंक अमेरिका में	सुजानगढ पीपलवा के

मदनलाल/भूराराम/रूपराम/रेखाराम (रामरख) – मदनलाल के एक पुत्र राजेन्द्रप्रसाद जो खेती का कार्य करते हैं। एवं राजेन्द्र प्रसाद के एक पुत्र मुकेश व दो पुत्री कृष्णा व सोनिया।

परमेश्वरलाल/भूराराम/रूपराम/रेखाराम (रामरख) – परमेश्वरलाल के निःसन्तान रहे। परमेश्वरलाल सन् 1982 से 1996 तक लोटिया ग्राम पंचायत के सरपंच पद पर रहे।



जबकि मौजीराम के दो पुत्र गुलाराम एवं नून्दाराम बताये गये हैं। गुलाराम के एक पुत्र घीसाराम एवं घीसाराम के एक पुत्र नत्थुराम एवं नत्थुराम के पुत्र का नाम रामनिवास। इसी प्रकार नुन्दाराम के कालूराम एवं हरद्वारी दो पुत्र हुए

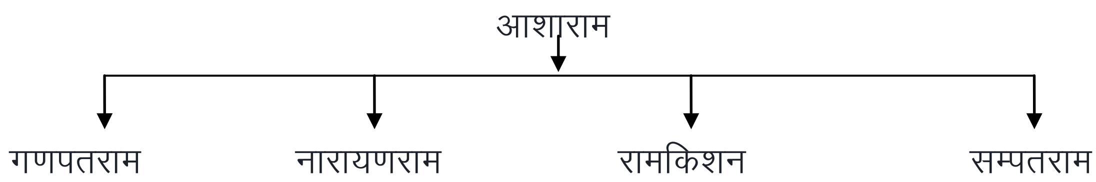


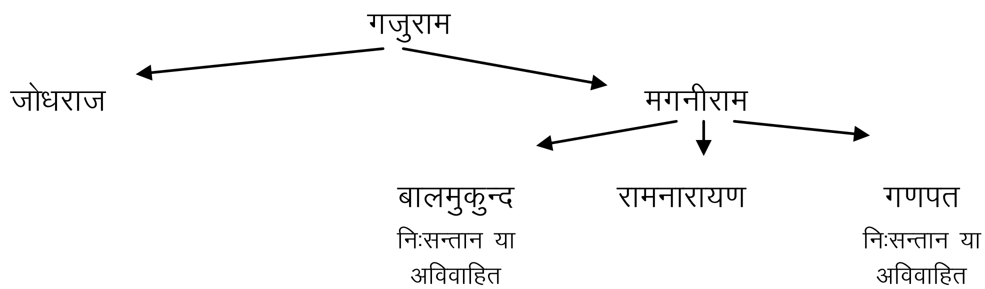
रामनिवास / नत्थुराम / घासीराम / गिधाराम(गुलाराम) / मौजीराम / सालगराम / गुलाबराम (संभावित) – रामनिवास वर्तमान में लोटिया ग्राम में रहते हैं एवं खेती का कार्य करते हैं।

मक्खनलाल जी सोती द्वारा पूरणमल के एक पुत्र टोडरमल बताया गया है। टोडरमल के 6 पुत्र बताये गये हैं जिनके नाम निम्न है रामगोपाल (निःसन्तान), नेतराम, सुलतान, बनारसीलाल, गुलजारीलाल (निःसन्तान) एवं मनीराम। ये सभी लोटिया ग्राम में रहे।

नेतराम के दो पुत्र जयदेव एवं रतनलाल हुए। जयदेव एवं रतनलाल। जयदेव के दो पुत्र संतोष कुमार एवं योगेश कुमार इसी प्रकार रतनलाल के पुत्र का नाम रोहित कुमार।

बनवारीलाल / केदारमल / सम्पतराम(गणपत,रामकिशन,नारायण,सम्पतराम) / आशाराम(पूरणमल,भोमाराम,मौजीराम,आशाराम) / सालगराम(सालगराम,लालचन्द,माणकचन्द,गजुराम) / गुलाबराम / डालूराम का कोई एक भाई।


आशाराम
गणपतराम
नारायणराम
रामकिशन
सम्पतराम


गजुराम
जोधराज
मगनीराम
बालमुकुन्द
निःसन्तान या अविवाहित
रामनारायण
गणपत
निःसन्तान या अविवाहित

डालूराम (4)

लालाराम

रामसुख (चिड़ावा) (देवधर)

उमाराम (खिंवाराम)

मायाराम (6)

गोपीराम (6)

हीरालाल (4)

नोपाराम

मोतीराम

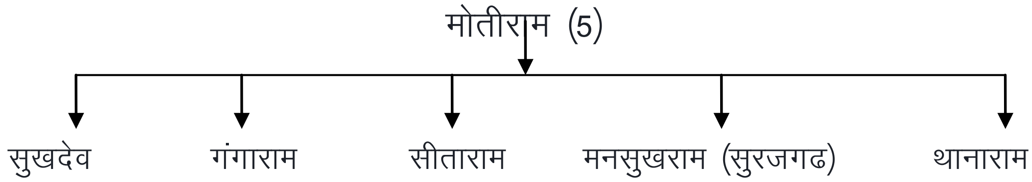
बलमाराम

उमेदराम (4)

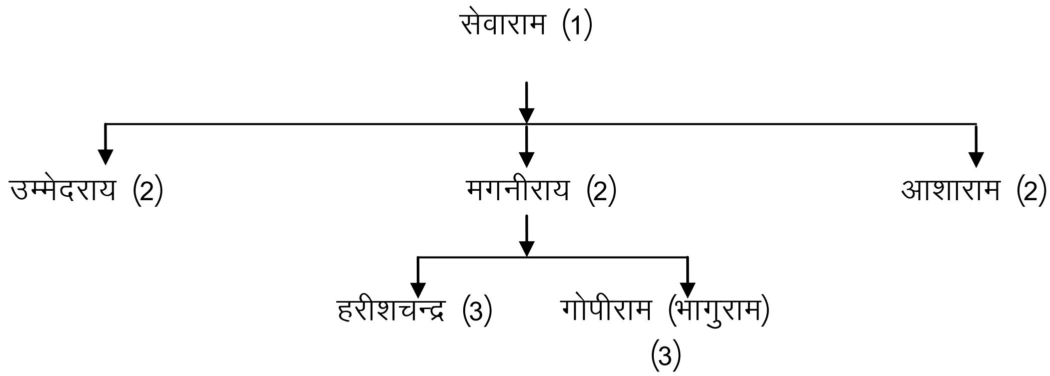
रामकुमार (बिसाउ)

किशनलाल

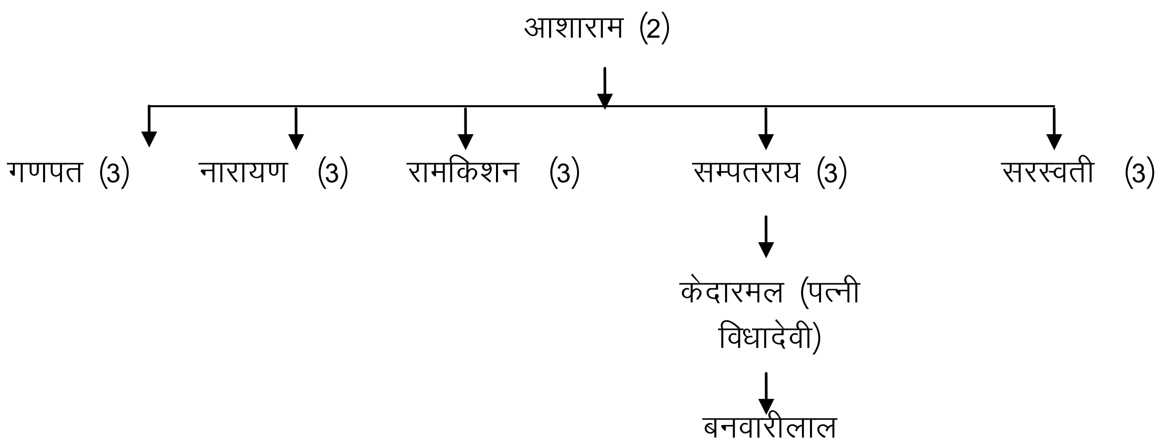
फतेहचन्द



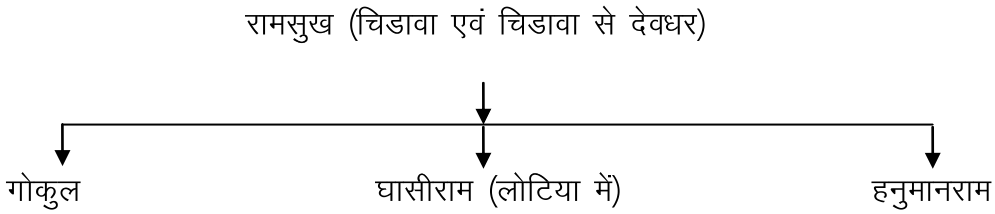
- सीताराम (6) के दो पुत्र कालुराम एवं नारायणराम
- मनसुखराय (6) के दो पुत्र मोतीराम एवं मातादीन
- मातादीन (7) के तीन पुत्र महावीर प्रसाद, हनुमान प्रसाद एवं गणपतराम
- गणपतराम (8) के चार पुत्र मनोहर, गोविन्द, श्यामसुन्दर (रायपुर) एवं गोविन्द



- हरीशचन्द्र (3) के एक पुत्र भागुराम (बिसाउ)
- गोपीराम (3) के तीन पुत्र भगवानाराम, सोहनलाल व गुगनराम। गुगनराम के पुत्र किशनलाल एवं किशनलाल के पुत्र महावीर (बम्बई में)।
- सोहनलाल (4) के एक पुत्र किशनलाल



मगनीराम (2)
↓
भागुराम (3)
↓
- भगवानाराम (4)
- सोहनराम (4)
- गुगनराम (4)
  ↓
  किशनलाल (5)
  ↓
  महावीर (बम्बई प्रवास) (6)



- हुणतराम के एक पुत्र
- हुणताराम के पुत्र बलदेव
- बलदेव के जगन्नाथ, देवीदत, बहादुरमल व मगजीराम (मगनीराम)

गोरसिया परिवारों का विवरण

- झुंझुनूं के रसिया ग्राम में गोरसियों के 45 घर है।
- चूरू तहसील के ग्राम सोमासी में गोरसिया के परिवार रह रहे हैं। सोमासी ग्राम इस क्षेत्र के गोरसिया परिवारों का मूल ग्राम है।
- रामलाल गोरसिया पुत्र खींवराज गोरसिया का जन्म सन् 1943 में हुआ।

भाटीवाड़ा – मनोज भाटीवाड़ा की गुढा में बिजली की दुकान है।

चूरू शहर में नोवाल परिवार :

आलोक सिनेमा के पिछे नोवाल परिवार रहते हैं, जो चूरू तहसील के ग्राम रामसरा से उठकर चूरू आये हैं। रामसरा में आज भी नोवाल परिवार रहते हैं। विजयकुमार नोवाल का परिवार वर्तमान में चूरू शहर में रह रहा है। रामसरा से चूरू आने के बारे में विजय कुमार नोवाल बताते हैं कि मेरी सबसे बड़ी बहिन भुगानी जो वर्तमान में 80 बरस की है का जन्म चूरू में हुआ है अर्थात हम कम से कम 80–85 बरस से पहले चूरू आ गये थे। विजय कुमार नोवाल के दादा का नाम भैराराम है एवं भैराराम के तीन पुत्र सागरमल, पोकरमल एवं बद्रीप्रसाद हैं। सागरमल का विवाह मण्डावा हुआ। पोकरमल निःसन्तान रहे तथा बद्रीप्रसाद नोवाल के चार पुत्र विजय कुमार, जगदीश प्रसाद, दौलतराम एवं पवन कुमार है। रामसरा से पूर्व नोवाल परिवार कहाँ रहा करते थे, की जानकारी विजय कुमार जी नहीं बता सके।

रामसरा में श्योलाराम नोवाल के दो पुत्र दूदाराम व टोरमल है।

सरदारशहर तहसील के रामसीसर भेड़वालिया ग्राम में करीब 45 परिवार नोवालों के हैं, दलूसर के श्यामलाल एवं हनुमान पीपलवा रामसीसर के नोवाल परिवार में ब्याहे हुए हैं।

चूरू तहसील के कड़वासर ग्राम में नोवाल परिवार रहते हैं। बिसाऊ एवं थैलासर में भी नोवाल परिवार रहते हैं। डाकिड़े जोहड़े की पश्चिमी दिशा में गंगाराम नोवाल का परिवार रहता हैं। गंगाराम नोवाल के श्यामलाल, परमानन्द, जुगलकिशोर एवं सांवरमल चार पुत्र हुए, जिनमें से वर्तमान में परमानन्द एवं सांवरमल जीवित है।

		गंगाराम नोवाल

गंगाराम नोवाल गंगाराम का विवाह देवासर के चोटिया परिवार में।		श्यामलाल – का विवाह रतनगढ में
		परमानन्द – का विवाह रतननगर बिल परिवार में।
		जुगलकिशोर – का विवाह किशनादेवी चोटिया के साथ।
		सांवरमल – का विवाह हनुमानगढ
		तुलछादेवी
		शांतिदेवी
		संतोषदेवी

हिसार के नोवाल

प्यारेलाल नोवाल

<table>
<tr><td rowspan="6">प्यारेलाल नोवाल

पत्नी का नाम विमला पुत्री तुलछादेवी। तुलछादेवी गंगाधर जोशी की काकेर सास।

तुलछादेवी और शांतिदेवी (आशा की मां) चाचा ताऊ की बहीने। तुलछादेवी तबामंडी की बोचीवाल जो कोटकूपरा चोटिया के ब्याही हुई थी। तुलछादेवी अपनी लड़की विमला एवं दामाद प्यारेलाल नोवाल के पास हिसार आ गई।</td><td rowspan="6"></td><td>गोविन्द</td></tr>
<tr><td>कुन्ती (कुन्ती का ससुराल सिरसा, कुन्ती रीतेश जोशी की माँ है एवं विनोद जोशी पुत्र रामचन्द्र जोशी की साली है। कुन्ती राजकुमार रूंथला चूरू की बडी साली। कुन्ती की एक लड़की मीनू सुरेन्द्र चोटिया पुत्र मदनलाल चोटिया चूरू की पत्नी है।</td></tr>
<tr><td>राधा का ससुराल पिलानी।</td></tr>
<tr><td>स्वीटी (विनोद जोशी पुत्र रामचन्द्र जोशी की पत्नी)</td></tr>
<tr><td>कौशल्या – विवाह मयड़(हिसार)</td></tr>
<tr><td>धन्नो का विवाह चूरू में राजकुमार रूंथला के साथ हुआ।</td></tr>
</table>

सिरसा शहर में :
जोशी परिवार

सिरसा हरियाणा में भगवन्तराय जोशी की संतानें निवास करती है। भगवन्तराय के भीमसेन, रूपाराम, रामसहाय व पतराम। भीमसेन के गंगाधर, रामचन्द्र, एवं उतमकुमार तीन पुत्र हुए।

भगवन्तराय जोशी (1)		रामसहाय
		पतराम
		रूपराम
		भीमसेन

रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी के परिवार का विवरण

रामसहाय के तीन पुत्र रूपराम, जगदीश एवं नैनूराम

रामसहाय (2) पुत्र भगवन्तराय जोशी		नारायणदत (नेणूराम) (निःसन्तान)
		जगदीश

नारायणदत (नेणूराम) (3) पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी		अणची – विवाह हिसार में। अणची एवं मूली पुत्री पतराम जोशी एक ही घर में ब्यायी
		सुरसती – विवाह कोटकपूरा में डिडवानिया के। शांति सुरसती की लड़की।
		पूरणी – बोदीवाली (आदमपुर) पीपलवा के।

जगदीश (3) पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी		गोरधन (रूपराम के गोद)
		रामकुमार
		मिठनलाल (निःसन्तान एवं ललित पुत्र रामकुमार गोद आया)

रामकुमार (4) पुत्र जगदीश पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी		मदनलाल (पतराम जोशी के गोद)
		विष्णुकुमार के एक लड़की डोली
		कृष्णाकुमारी
		ललितकुमार (मिठनलाल के गोद लिया)
		मंजूकुमारी

मिठनलाल (4) जगदीश पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी मिठनलाल के कोई पुत्र नहीं हुआ। ललित पुत्र रामकुमार को गोद लिया।		ललित पुत्र रामकुमार जोशी को मिठनलाल ने गोद लिया।

ललितकुमार (5) मिठनलाल पुत्र जगदीश पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी		हिमांशु
		गौरव

पतराम पुत्र भगवन्तराय जोशी के परिवार का विवरण

पतराम (2) पुत्र भगवन्तराय जोशी		मूलीदेवी – मूलीदेवी का विवाह हिसार में। अणची पुत्री नेणूराम जोशी भी इसी घर में ब्यायी।
		मदन पुत्र रामकुमार जोशी गोद आया

मदनलाल (5) पुत्र रामकुमार पुत्र जगदीश पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी (मदनलाल का विवाह रेवाड़ी माटोलिया)		ममता (ममता का विवाह गंगानगर रूँथला के)
		अनिल
		कालू

रूपराम पुत्र भगवन्तराय जोशी के परिवार का विवरण

रूपराम (2) पुत्र भगवन्तराय जोशी		निःसन्तान होने के कारण जगदीश जोशी का पुत्र गोरधन गोद आया। जगदीश जोशी के पिता का नाम रामसहाय।

गोरधन (4) पुत्र जगदीश पुत्र रामसहाय पुत्र भगवन्तराय जोशी (रूपराम के गोद) (गोरधन का विवाह रायगढ (मध्यप्रदेश) में हुआ।		चन्द्रभागा (चन्द्रभागा का विवाह चूरू में भंवानीशंकर पीपलवा के साथ हुआ)

भीमसेन जोशी के परिवार का विवरण

भीमसेन (2) पुत्र भगवन्तराय जोशी भीमसेन का ससुराल रामसरा		गंगाधर
		रामचन्द्र
		उत्तम कुमार
		सावित्री

गगाधर जोशी (3) पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी गंगाधर जोशी के दो विवाह हुए पहला विवाह कोटकपूरा के चोटिया परिवार में एवं दूसरा विवाह भादरा पत्नी का नाम सुरसती नोवाल। गंगाधार जोशी की काकेर सास तुलछादेवी थी। तुलछादेवी और शांतिदेवी (आशा की मां) चाचा ताऊ की बहीने। तुलछादेवी तबामंडी की बोचीवाल जो कोटकूपरा चोटिया के ब्याही हुई थी। तुलछादेवी अपनी लड़की विमला एवं दामाद प्यारेलाल नोवाल के पास हिसार आ गई।		बलदेवराज
		तपेश्वरकुमार (अविवाहित फौत)
		सुरेन्द्र कुमार

बलदेवराज जोशी (4) गगाधर जोशी पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी। बलदेवराज जोशी की शादी हिसार में उमादेवी पुत्री मोमनराम रूँथला के साथ हुआ। उमादेवी की माता का नाम गंगादेवी। गंगादेवी मंगल्यारा का पीहर हिसार के पास लहरी ग्राम में। बलदेवराज जोशी का ननिहाल भादरा नोवाल		प्रवीणकुमार
		राजन
		विज्यन्त
		सरिता (सरिता का चूरू में पीपलवा परिवार में विवाह 29 नवम्बर,1993 को)

परिवार में। बलदेवराज जोशी की माँ का नाम सुरसती। सुरसती के भाईयों के नाम गौरीशंकर, केशव, कुलशेखर,। गौरीशंकर एवं कुलशेखर का परिवार भादरा में एवं केशव का परिवार सादुलपुर रहता है। केशव नोवाल की पुत्री प्रेम का विवाह उतमकुमार जोशी पुत्र भीमसेन जोशी के साथ हुआ।		

रामचन्द्र जोशी (3) भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी (रामचन्द्र जोशी का परिवार सिरसा से ऐलनाबाद गया) रामचन्द्र जोशी की ससुराल गंगानगर एवं पत्नी का नाम कलावती रूँथला		वेदप्रकाश
		विनोदकुमार
		विकास (बिटू)
		शीला
		सन्तोष
		ऊषा
		निर्मला

वेदप्रकाश (4) पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी वेदप्रकाश का विवाह दिल्ली हुआ। वेदप्रकाश की पत्नी का नाम दुलारी।		

विनोदकुमार (4) पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी विनोदकुमार विवाह हिसार के नोवाल परिवार में हुआ। विनोदकुमार के ससुर का नाम प्यारेलाल नोवाल।		

उत्तमकुमार (3) पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय		कृष्णेश

जोशी उतमकुमार पुत्र भीमसेन जोशी की ससुराल हिसार काछवाल परिवार में। उतमकुमार की पत्नी उर्मिला पत्नी राजन की सगी बुआ थी। उतम कुमार की पत्नी का नाम सत्यभामा है।		धर्मेश
		पदमेश
		विमलेश
		गोगा
		पोपा
		गीतेश्वरी

कृष्णेश (4) पुत्र उत्तमकुमार पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी कृष्णेश पुत्र उतमकुमार का विवाह राजगढ जिला चूरू में हुआ। पत्नी का नाम प्रेम		जग्नेश
		पुत्री का नाम

धर्मेश (4) पुत्र उत्तमकुमार पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी धर्मेश पुत्र उतमकुमार का विवाह नागपुर महाराष्ट्र में हुआ। धर्मेश की पत्नी का नाम लता		

पदमेश (4) पुत्र उत्तमकुमार पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी		कृतिका

विमलेश (4) पुत्र उत्तमकुमार पुत्र भीमसेन पुत्र भगवन्तराय जोशी		अविवाहित स्वर्गवास

रानियां जिला सिरसा के गिदड़का ग्राम के जोशी

रानियां के पास ग्राम गीदड़का है। बताया जाता है कि 1947 से पूर्व इस ग्राम का नाम सादुलपुर था। 1947 में विस्थापन इस ग्राम से भी हुआ बताया जाता है। ग्राम में नोरंगराम जोशी का परिवार रहता है। गिदड़का के इस जाशी परिवार का निकास नेमों ग्राम से हुआ है। नोरंगराम जोशी वर्तमान में 98 वर्ष के हैं। नोरंगराम जोशी द्वारा अपने परिवार के बारे में बताया जिसका विवरण निम्न प्रकार से है –

गुमानीराम (1) • गुमानीराम व मोहनलाल दोनों सगे भाई हैं। • मोहनराम का विवाह भादरा में बोचीवाल परिवार में। • गुमानीराम की पत्नी देवासर के गोलवा परिवार से • गुमानीराम की पत्नी के भाईयों के नाम छतूराम, किशनलाल		जीवणराम

जीवणराम (2) पुत्र गुमानीराम • जीवणराम का विवाह ऐलनाबाद में भुगानाराम काछवाल की बहिन दुर्गा के साथ हुआ। • दुर्गा के पिता का नाम बिरूराम काछवाल।		नोरंगराम

नोरंगराम (3) जीवणराम पुत्र गुमानीराम नोरंगराम के दो विवाह हुए। दूसरी पत्नी का नाम शांति। शांति के पिता का नाम रामनाथ नोवाल। नोरंगराम की ससुराल नाथवाणा में		कुनणराम
		द्वारका प्रसाद
		मोतीलाल
		चम्पालाल

कुनणराम (4) नोरंगराम पुत्र जीवणराम पुत्र गुमानीराम कुनणराम का विवाह मांझूवाला चोटिया परिवार में।		

द्वारकाप्रसाद (4) नोरंगराम पुत्र जीवणराम पुत्र गुमानीराम द्वारका प्रसाद का विवाह जानकीदास वाला में चोटिया परिवार में।		

मोतीलाल (4) नोरंगराम पुत्र जीवणराम पुत्र गुमानीराम मोतीलाल का विवाह गंगानगर गोलवा परिवार में।		

चम्पालाल (4) नोरंगराम पुत्र जीवणराम पुत्र गुमानीराम चम्पालाल का विवाह बगड़ियावाला रामपुर में चोटिया परिवार में।		

चूरू में जोशी परिवार

		भूरामल
		बालूराम

भूरामल		झाबरमल
		कन्हैयालाल
		फतेहचन्द
		पुरूषोतमलाल
		सोहनीदेवी – का विवाह रामगढ नोवाल परिवार में।
		परमेश्वरीदेवी – का विवाह चोटिया परिवार में विश्वम्भ्ऱलाल पुत्र लक्ष्मीनारायण चोटिया निवासी चूरू के।

बालूराम		निःसन्तान स्वर्गवास

झाबरमल पुत्र भूरामल का विवाह सूरजगढ गीतादेवी के साथ।		सुधादेवी – का विवाह डिडवाना में डिडवानिया परिवार में।
		जितेन्द्रकुमार – का विवाह चिड़ावा में चोटिया परिवार में।
		राजूदेवी – का विवाह चरखी दादरी मंगल्यारा परिवार में।
		मोतीलाल
		मानवेन्द्र

कन्हैयालाल पुत्र भूरामल		प्रदीपकुमार – का विवाह मेलूसर रूँथला के
		मंजूदेवी – का विवाह राजेन्द्रकुमार मंगल्यारा के साथ।
		मुकेशकुमार – का विवाह सुजानगढ नोवाल परिवार में।

फतेहचन्द पुत्र भूरामल		संजयकुमार – का विवाह चूरू में उमा पुत्री मदनलाल चोटिया (अध्यापक) के साथ।
		विजयकुमार – का विवाह चूरू में मीनू पुत्री मांगीलाल गोरसिया के साथ।

पुरूषोतमलाल पुत्र भूरामल		अजयकुमार
		शिल्पा
		कुलदीप

चूरू में जोशी परिवार

जोशी परिवार

चूरू शहर में जोशी परिवार निवास कर रहा है। यह परिवार राजगढ तहसील के ग्राम थान मठुई से उठकर कुछ वर्षों तक राजगढ रहा एवं बाद में चूरू आकर रहने लगे। इस परिवार का विवरण इस प्रकार है –

लेखराम जोशी (1)		रामचन्द्र जोशी (2)

रामचन्द्र जोशी (2) पुत्र लेखराम जोशी रामचन्द्र जोशी का परिवार थान मठुई रहता था। थान मठुई से उठकर कुछ बरस तक राजगढ रहे एवं राजगढ से चूरू में इनका परिवार निवास कर रहा है। रामचन्द्र का विवाह मालासर (रतनगढ) में मोहरीदेवी		पूर्णमल जोशी हीरालाल जोशी रिधकरण जोशी रतनीदेवी – का विवाह प्रतिभानगर में शंकरलाल काछवाल के साथ।

पुत्री रामलाल नोवाल के साथ हुआ। मोहरीदेवी गंगाराम नोवाल की बहिन है।		गीतादेवी – का विवाह मुरलीधर काछवाल के साथ। शंकरलाल काछवाल व मुरलीधर काछवाल सगे भाई हैं।

पूर्णमल (3) पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी पूर्णमल का विवाह लक्ष्मीदेवी के साथ। लक्ष्मीदेवी पाबुसर के माटोलिया परिवार की। लक्ष्मीदेवी के पिता का नाम श्यामलाल माटोलिया एवं माँ का नाम पूर्णीदेवी		निरंजनलाल
		परमेश्वरलाल
		पुरूषोतमलाल
		तेजपाल
		केशरदेवी – का विवाह फतेहपुर में चम्पालाल पिपलवा के साथ। चम्पालाल के पिता का नाम रामगोपाल। रामगोपाल की पत्नी का नाम शारदादेवी
		चन्दादेवी – का विवाह फतेहपुर में ओमप्रकाश चोटिया के साथ। ओम प्रकाश के पिता का नाम गणपतराम एवं माता का नाम कमलादेवी।

हीरालाल (3) पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी हीरालाल का विवाह फतेहपुर में भागोतीदेवी झिखनाडिया के साथ।		

रिधकरण (3) पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी रिधकरण का विवाह सेवदा परिवार में विमलादेवी सेवदा पुत्री पूर्णमल सेवदा के साथ।		

निरंजनलाल (4) पुत्र पूर्णमल पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी निरंजनलाल का विवाह रतनगढ के रूँथला परिवार में शारदादेवी पुत्री भोजराज के साथ।		

परमेश्वरलाल (4) पुत्र पूर्णमल पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी परमेश्वरलाल का विवाह सुजानगढ के चोटिया परिवार में यशोदादेवी पुत्रर मोतीलाल चोटिया के साथ।		

पुरूषोतमलाल (4) पुत्र पूर्णमल पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी पुरूषोतमलाल का विवाह फतेहपुर के बढाढरा परिवार में त्रिवेणीदेवी पुत्री हरिराम के साथ। त्रिवेणीदेवी के दादा का नाम मानाराम एवं दादी का नाम रूकमणी।		

तेजपाल (4) पुत्र पूर्णमल पुत्र रामचन्द्र जोशी पुत्र लेखराम जोशी तेजपाल का विवाह चूरू में चोटिया परिवार में बनवारीलाल चोटिया की पुत्री राजूदेवी के साथ। बनवारीलाल चोटिया के पिता का नाम मालचन्द एवं मालच्नद के पिता का नाम लिखमीचन्द चोटिया (भगवानदास बागला के मुनीम) है।		

धोधलिया में जोशी परिवार

रामकुमार जोशी रामकुमार जोशी का विवाह सीतादेवी के साथ हुआ। सीतादेवी का पीहर फतेहपुर था।		महेश कुमार
		नन्दलाल
		बिमलादेवी – का विवाह घांघू में लक्ष्मीचन्द सेवदा के साथ।
		भगवानीदेवी – भगवानीदेवी का विवाह भंवरलाल पुत्र केशरदेव झिखनाड़िया के साथ चूरू में हुआ।
		तरबीणीदेवी – का विवाह फतेहपुर में मुरारीलाल रिणवां के साथ।
		चम्पादेवी – का विवाह जोशियों की ढाणी में।

महेशकुमार पुत्र रामकुमार जोशी महेशकुमार का विवाह रिणू (फतेहपुर) चोटिया परिवार में।		

नन्दलाल पुत्र रामकुमार जोशी महेशकुमार का विवाह रिणू (फतेहपुर) चोटिया परिवार में।		

सिरसा में भाटीवाल परिवार

रामगोपाल भाटीवाल पुत्र सावित्री सावित्री गंगाधर जोशी की बहिन थी। सावित्री का विवाह अबोहर भाटीवालों के हुआ। सावित्री के प्रथम प्रसव के समय सावित्री के पती का देहान्त हो गया जिसके कारण उनके भाई गंगाधर जोशी सावित्री को सिरसा ले आये। सिरसा में सावित्री के एक पुत्र रामगोपाल हुआ। रामगोपाल के दो विवाह हुए पहला विवाह संगरिया में व दूसरा विवाह तपामंडी (पंजाब) में शांति बोचीवाल के साथ हुआ। रामगोपाल की पत्नी का नाम शांतिदेवी बोचीवाल।		प्रेमलता – विवाह करंडी (हिसार) में बदरीप्रसाद रूँथला के साथ हुआ। वर्तमान में यह परिवार पीलीबंगा रहता है।
		प्रभा – प्रभा का विवाह किरढावण (हिसार) में साधुराम मंगलहारा के साथ हुआ। वर्तमान में यह परिवार सूरतगढ रहता है।
		आशा – आशा विवाह रायसिंहनगर में सुरेश कुमार सेवदा के साथ हुआ।
		देवेन्द्र – निःसन्तान एवं स्वर्गवास
		मधु – मधुदेवी का विवाह करंडी (हिसार) में बदरीप्रसाद रूँथला के छोटे भाई गोपाल रूँथला के साथ हुआ।

जयनारायण, हीरालाल, बनवारीलाल जोशी। जयनारायण के रामकिशन एवं गोकुल। गोकुल के दो लड़के हुए। हीरालाल बनवारी लाल दादरी से उठे हुए हैं। दादरी से पहले नीम के थाने से आने की संभावना। हीरालाल की बहु राजेन्द्र की मौसी दादरी की। हीरालाल के मोती और हरि दो पुत्र। बनवारीलाल के सोमदत, रामकुमार, ओमप्रकाश, परमानन्द, राजकुमार। बनवारी की बहु। ओमप्रकाश, लालाराम, बाबो, शिवभगवान। पंजाबों (तुलसां) का खानदान है। रामकिशन के दो लड़की लडका नहीं।

सिरसा शहर में चोटिया परिवार

- **उदाराम हलवाई सिरसा में चोटिया परिवार से है।**

<table>
<tr><td rowspan="3">उदाराम चोटिया (हलवाई)</td><td>गौरीशंकर</td></tr>
<tr><td>श्यामलाल (श्यामलाल की पत्नी पीपलवा परिवार से) (लेखिका पुत्री जिसका विवाह सरदारशहर सेवदा परिवार में)</td></tr>
<tr><td></td></tr>
</table>

सिरसा शहर में पिपलवा परिवार

- ताराचन्द पिपलवा का परिवार सिरसा में निवास करता है। ताराचन्द पीपलवा हिसारिया बाजार में रहते थे। ताराचन्द पीपलवा की पत्नी गीगोरानी ग्राम की थी एवं नाम नारंगी जोशी । नारंगी जोशी उर्मिला काछवाल हिसार से राजन की पत्नी के भाई विजय की बुआ सास। ताराचन्द पीपलवा का सिरसा के हिसारिया बाजार में मशहूर ढाबा था। ताराचन्द पीपलवा का परिवार नानड़ी (हिसार) से है। ताराचन्द, हरदत एवं रामचन्द्र आदि तीन भाई।

हरदत नानडी ही रहता था, हरदत का एक पुत्र चिरंजीलाल।
हरदत, हनुमानगढ के बजरंग मामा (सेवदा) का दादसरा था।
बजरंग लाल सेवदा उमादेवी जोशी की मौसी का लडका है।
चिरजीलाल की लडकी कलावती बजरंग लाल सेवदा की पत्नी
रामचन्द्र पीपलवा के 5 पुत्र 4 पुत्री हुई कुल 9 संतान हुई।

रामचन्द्र पीपलवा। रामचन्द्र पीपलवा के दो विवाह पहला विवाह राधा जोशी के साथ सिरसा में। दूसरा विवाह दिल्ली के पास सीटी में।		कृष्णकुमार – का विवाह ऐलनाबाद काछवाल परिवार में। पत्नी का नाम शारदा (पुत्री भगवानाराम काछवाल)। भगवानराम काछवाल विज्यन्त का दाद ससुर।
		महावीरप्रसाद (तुलछाराम जोशी के गोद) (मैना का पति) मैना किरढावण की मंगल्यारी महावीरप्रसाद अपने सगे नाना तुलछाराम जोशी के गोद आया।
		ऋषिकुमार – का विवाह मैना काछवाल के साथ ऐलनाबाद हुआ। (पुत्री भगवानाराम काछवाल)। भगवानराम काछवाल विज्यन्त का दाद ससुर। मैना एवं शारदा सगी बहिने हैं।
		किशोरकुमार
		प्रेमकुमार – का विवाह ऐलनाबाद रामेश्वरलाल चौटिया की लड़की के साथ।

ताराचन्द पीपलवा (पत्नी का नाम नारंगी जोशी) ताराचन्द पीपलवा की पत्नी गीगोरानी ग्राम की थी एवं नाम नारंगी जोशी। नारंगी जोशी उर्मिला काछवाल हिसार से राजन की पत्नी के भाई विजय की बुआ सास थी। ताराचन्द पीपलवा का सिरसा में ढाबा था।	ओम प्रकाश राधेश्याम इन्द्रो (विवाह सिरसा में उदाराम चोटिया, हलवाई के पुत्र श्यामलाल को)

ओम प्रकाश पुत्र ताराचन्द पीपलवा ओमप्रकाश की ससुराल हिसार। विवाह महावीर काछवाल की पुत्री श्वेता से।	

राधेश्याम पुत्र ताराचन्द पीपलवा राधेश्याम का विवाह सोहनलाल पलडिया (पलडा ग्राम) की पुत्री चमेली के साथ हुआ।	

मंगलहारा परिवार :

चूरू जिले की रतनगढ तहसील के ग्राम पाबूसर में मंगलहारा परिवार रहते हैं। मेरी दादी का गोत्र मंगलहारा है। दादी सूवटी के भाई का नाम गंगाराम मंगलहारा है। गंगाराम जी का विवाह सरदारशहर तहसील के फोगां ग्राम में चोटिया परिवार में हुआ। बताया जाता है कि पाबूसर ग्राम के मंगलहारा कातर ग्राम से आये हैं एवं एक भाई पाबूसर रह गया एवं दूसरा भाई हरियाणा के हिसार के करड़ावण ग्राम चला गया। करड़ावण में मंगलहारा परिवार रहते हैं।

रतनगढ में मंगलहारा परिवार रहते हैं, रतनगढ के मंगलहारा परिवारों में से कुछ परिवार सीकर के धोद से आये बताये जाते हैं।

डीडवानिया परिवार :

डीडवानिया परिवार का यह विवरण श्री विनोदकुमार डीडवानिया द्वारा लिखाया गया है। इस परिवार को लुहारूवाले डीडवानिया के नाम से भी जाना जाता है। जानकारी दी गई कि लुहारू के नवाब से मनमुटाव के कारण पीपली (लुहारू) से रवाना होकर मौजीराम अपने परिवारजनों के साथ मण्डावा आये।

हरनारायण (1)		मौजीराम

मौजीराम (2) पुत्र हरनारायण		सांवरमल
		कालूराम
		शिवप्रसाद
		श्योनारायण
		भूरामल

कालूराम (3) मौजीराम पुत्र हरनारायण		धनराज
		नथमल
		हरिराम
		परमादेवी – का विवाह कोलिन्डा (नवलगढ़) घासीराम चोटिया के साथ।

धनराज (4) कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण		रामावतार
		विनोदकुमार
		रमेशकुमार
		सुरेशकुमार
		सुमनदेवी –का विवाह मण्डावा में राधेश्याम बील के साथ।
		सुनिता – का विवाह रतननगर जुगलकिशोर माटोलिया के साथ।

हरिराम (4) कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण हरिराम का विवाह बिसाऊ में कलावती माटोलिया के साथ हुआ।		अलका
		————————

रामावतार (5) धनराज पुत्र कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण रामावतार का विवाह रतनगढ में संतोषदेवी काछवाल के साथ।		कृष्णादेवी – का विवाह नूवां (झुंझुनूं) माटोलिया परिवार में।

विनोदकुमार (5) धनराज पुत्र कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण विनोदकुमार का विवाह उषादेवी गोलवा के साथ नवलगढ में।		ज्योति
		प्रीति
		निकिता

रमेशकुमार (5) धनराज पुत्र कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण रमेशकुमार का विवाह कन्टेवा (लक्ष्मणगढ) सुरग्यानदेवी गोधला के साथ		शुभम
		मनीषकुमार

सुरेशकुमार (5) धनराज पुत्र		

कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण सुरेशकुमार का विवाह रतनगढ में कौशल्यादेवी के साथ		

नथमल (4) कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण नथमल का विवाह खरीन्टा (रामगढ) में सीतादेवी चोटिया के साथ।		कजोड़मल
		देवकरण
		सन्तोष – सन्तोष का विवाह कोटवाद नाथोताल में प्रकाश जोशी के साथ।

कजोड़मल (5) नथमल (4) कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण कजोड़मल का विवाह चूरू में मंडकरा परिवार में अंजू के साथ।		अरविन्द
		————————

देवकरण (5) नथमल (4) कालूराम पुत्र मौजीराम पुत्र हरनारायण कजोड़मल का विवाह चूरू में मंडकरा परिवार में अंजू के साथ।		देवकरण अविवाहित।

काछवाल परिवार

हिसार के काछवाल

मोहनलाल काछवाल	सादीराम काछवाल

सादीराम काछवाल सादीराम का विवाह शेखुपुरिया (सिरसा) में सादीराम का जीवन्त खर्च किया गया। इस अवसर पर 84 गावों की चिट्ठी गई एवं दो–दो रूपये प्रति व्यक्ति दिये गये। हिसार में सादीराम माने हुए व्यक्ति बताये गये हैं।		महावीरप्रसाद (वैध)
		देवकीनन्दन (वैध)
		गुलजारीलाल
		अणचीदेवी – का विवाह चन्दा का बास गंगाधरजी नोवल के साथ।
		सत्यभामा – का विवाह उतम कुमार पुत्र भीमसेन जोशी के साथ।

महावीरप्रसाद (वैध) पुत्र सादीराम काछवाल		

देवकीनन्दन पुत्र सादीराम काछवाल देवकीनन्दन काछवाल की पत्नी का नाम सरस्वतीदेवी। सरस्वतीदेवी का 93 वर्ष की उम्र में 02 अगस्त,2023 को स्वर्गवास हुआ। सरस्वतीदेवी का पीहर मीरकां। सरस्वतीदेवी के पिता का नाम मघाराम बोचीवाल		विजयकुमार
		कैलाशकुमार
		सतबीर (मोनी)
		ललितकुमार
		विनोदकुमार –
		सन्तोष – का विवाह नहराणा में हनुमानप्रसाद पुत्र हजारीलाल रूँथला

		के साथ।
		उर्मिला – का विवाह सिरसा में राजन जोशी पुत्र बलदेवराज जोशी के साथ।
		बैबी

विजयकुमार पुत्र देवकीनन्दन पुत्र सादीराम काछवाल विजयकुमार का विवाह गीगोरानी जोशी परिवार में। नारंगी जोशी विजय की बुआ सास है।		गौरवकुमार
		कपिलकुमार

कैलाशकुमार पुत्र देवकीनन्दन पुत्र सादीराम काछवाल कैलाशकुमार का विवाह गंगानगर में		

सतबीर (मोनी)पुत्र देवकीनन्दन पुत्र सादीराम काछवाल विवाह ऐलनाबाद		

ललिकुमार पुत्र देवकीनन्दन पुत्र सादीराम काछवाल		राहुल

गुलजारीलाल (वैध) पुत्र सादीराम काछवाल		

काछवाल परिवार चूरू

हड़मानमल काछवाल		शंकरलाल
		मुरलीधर

मुरलीधर पुत्र हड़मानमल काछवाल		सीताराम
		विनोदकुमार
		पृथ्वीराज
		लक्ष्मीदेवी – का विवाह रामसरा में जुगलकिशोर नोवाल के साथ।
		सन्तोषदेवी – का विवाह फतेहपुर में सुरारीलाल नोवाल के साथ।
		सुशीलादेवी – का विवाह राजकुमार पिपलवा के साथ फतेहपुर।

सीताराम पुत्र मुरलीधर पुत्र हड़मानमल काछवाल सीताराम का विवाह मेलूसर (रतनगढ) में कमलादेवी रूँथला के साथ।		

विनोदकुमार पुत्र मुरलीधर पुत्र हड़मानमल काछवाल विनोदकुमार का विवाह पीपली (पिलानी) विमलादेवी डीडवनिया के साथ।		

पृथ्वीराज पुत्र मुरलीधर पुत्र हड़मानमल काछवाल पृथ्वीराज का विवाह सरदारशहर में ममताकुमारी गोलवा के साथ।		

सीताराम पुत्र मुरलीधर पुत्र हड़मानमल काछवाल सीताराम का विवाह मेलूसर (रतनगढ) में कमलादेवी रूँथला के साथ।		

कान्तीलाल काछवाल पुत्र शंकरलाल पुत्र हड़मानमल कान्तीलाल का विवाह फतेहपुर में पुष्पादेवी के साथ बुढाढरा परिवार में।		अरूणकुमार
		किशनलाल
		अंजूदेवी – का विवाह फतेहपुर में दिनेश कुमार पिपलवा
		ममतादेवी – का विवाह सीकर में सुनिलकुमार डीडवानिया के साथ।
		सीमादेवी – का विवाह आशीष कुमार चोटिया के साथ फतेहपुर में।
		सरस्वतीदेवी – का विवाह हरीशकुमार चोटिया के साथ सीकर में
		प्रियाकुमारी – का विवाह संदीपकुमार चोटिया के साथ।

अरूणकुमार पुत्र कान्तीलाल काछवाल पुत्र शंकरलाल पुत्र हड़मानमल अरूणकुमार का विवाह मंडावा में ज्योति के साथ।		

किशनलाल पुत्र कान्तीलाल काछवाल पुत्र शंकरलाल पुत्र हड़मानमल किशनलाल अविवाहित।		

ऐलनाबाद के काछवाल

भगवानाराम काछवाल देवासर गोलवा परिवार में।		बजरंगलाल
		मदनलाल
		शंकरलाल
		शारदादेवी – पति का नाम कृष्णकुमार पिपलवा सिरसा से। भगवनराम काछवाल विज्यन्त का दाद ससुर।
		मैनादेवी – का विवाह ऋषिकुमार पिपलवा (एडवोकेट) के साथ।
		गुड्डीदेवी – का विवाह कालू में सत्यनारायण रिणवां के साथ। वर्तमान में नोहर रहते हैं।
		चम्पादेवी – का विवाह कालू में चोटिया परिवार में। पति का नाम ओमप्रकाश चोटिया। वर्तमान में नोहर

		रहते हैं।
		कलावती – का विवाह विजयनगर चोटिया परिवार में। पति का नाम नन्दलाल चोटिया।

बजरंगलाल पुत्र भगवानाराम बजरंगलाल का विवाह दुर्गादत पिपलवा (पटवारी) की पुत्री सन्तोष के साथ हुआ। दुर्गादत पिपलवा (पटवारी) की पत्नी का नाम सीतादेवी		

मदनलाल पुत्र भगवानाराम मदनलाल का विवाह रतनपुरा (संगरिया) में प्रेमलता पुत्री मालाराम सेवदा के साथ।		मदनलाल के एक पुत्री ममता। ममता का विवाह सिरसा में जोशी परिवार में विज्यन्त जोशी पुत्र गलदेपराज जोशी के साथ।

शंकरलाल पुत्र भगवानाराम विवाह अबोहर में।		